



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

स. 11] नई विल्ही, नोवलाला, भ्रैंस 21, 1992/वैषाख 1, 1914
No. 11] NEW DELHI, TUESDAY, APRIL 21, 1992/VAISAKHA 1, 1914

इस भाग में भिन्न पृष्ठ दस्ता की जाती हैं जिससे किंचित् यह असम संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

दारिद्र्य संकालन

(मसाला बोर्ड)

प्रविसूचना

कोशीन, 10 मार्च, 1992

फा. सं. 13/2/88 संस्करण:— मसाला बोर्ड अधिनियम, 1986
(1986 का 10) की वारा 34 के साथ पटित वारा 39 वारा प्रवत
प्रवितर्यों के प्रयोग में, मसाला बोर्ड, सरकार के पूर्व अनुभोदन
से, एतबदारा नियमित विनियम बनाता है, अर्थात्:—

भाग—I

प्रारंभिक

1 संक्षिप्त शीर्षक और प्रारंभ: (1) इन विनियमों को मसाला
बोर्ड द्वारा (वर्गीकरण, नियन्त्रण एवं अपील) विनियम, 1992 कहा
गाए।

(2) ये विनियम सरकारी राजपत्र में प्रकाशित किए जाने की शर्ताब्द
से लागू होंगे।

2 परिवारां:— जब तक कि संदर्भ से व्यव्याप्ति न हो, इन
विनियमों में—

(क) बोर्ड के कर्मचारी के संबंध में 'नियोजित प्राधिकारी से अधिकारी—

(i) उस प्राधिकारी से है, जिसे उस पद पर नियुक्तियाँ करने का
प्रधिकार है, जिसे बोर्ड का कर्मचारी व्यव्याधी रूप से धारण करता है, प्रयत्ना

(ii) उस प्राधिकारी से है, जिसने उस पद पर बोर्ड के कर्मचारी की
नियुक्ति की, जिसे वह व्यव्याधी रूप से धारण करता है,

(य) "बोर्ड" से अधिकारी मसाला बोर्ड अधिनियम, 1986 (1986
का 10) के अधीन गठित मसाला बोर्ड से है,

(ग) "बोर्ड के कर्मचारी" से अधिकारी किसी भी ऐसे व्यक्ति से है,
जिसे बोर्ड के अधीन नियोजित किया गया हो और जिसे केन्द्रीय सरकार
व्यव्याधी राज्य सरकार के मैत्रे नियोजित कर्मचारियों में सम्मिलित किया
जाता हो,

(द) "व्यव्याधी" से अधिकारी बोर्ड के व्यव्याधी से है,

(इ) "अनुशासनिक प्राधिकारी" से अधिकारी उस प्राधिकारी से है,
जो इन विनियमों में विनियिष्ट किसी भी व्यक्ति को बोर्ड के कर्मचारी
प्रविशीयत करने के लिए इन विनियमों के अधीन उसमें है।

(b) "बेतन" से अधिकाय बही होगा, जो किंतु सरकार के कर्मचारियों पर लागू मूल नियमों के मूल नियम 9(21) (क) (1) में "बेतन" के लिए निर्धारित किया गया है,

(c) "मनुसूची" से अधिकाय इह विनियमों की मनुसूची से है,

(d) "सचिव" से अधिकाय बोर्ड के विविध से है

(e) "कैवाल" से अधिकाय बोर्ड के अधीन लेता है,

(f) विभीत पद के बेतन अकाल "बेतनमाल" से अधिकाय उस पद के संबद्ध बेतन अकाल बेतनमाल से है।

3- अग्रप्रोत :- मे विनियम नियमिति को छोड़कर बोर्ड के सभी कर्मचारियों पर लागू होगे :—

(a) ऐसा कोई भी अधिक, जिसे अनियत रूप से नियोजित किया गया है।

(b) ऐसा कोई भी अधिक, जो ईनिक मजदूरी पर नियोजित हो,

(c) ऐसा कोई भी अधिक, जो मूल महीने से कम अवधि के नियम पर सेवा-मूलिकता के अधीन हो, और

(d) ऐसा कोई भी अधिक, जिसकी नियुक्ति नियमित रूपानन्द के लिए न की गई हो।

(2) उग-विनियम (1) में किसी बात के होने हुए सी, बोर्ड, बेंड्रीय बरकार के पूर्व मनुमोदन से, आदेश डारा बोर्ड के किसी भी कर्मचारी को या कर्मचारियों के मनुष्य को इन सभी विनियमों या इनमें से किसी विनियम के प्रबलंग से वंचित कर सकता है।

(3) यदि कोई सम्बेद्ध उत्पन्न होता है, तो आगामा विर्तीय के लिए केन्द्रीय सरकार को प्रेषित किया जाएगा, अने ही ये सभी विनियम या इनमें से कोई विनियम किसी व्यक्ति पर लागू होते हों।

भाग- II

बारीकरण

पदों का बारीकरण :- बोर्ड की सेवा के प्रक्रीय सभी पदों को नियम बारीकरण किया जाएगा :—

क्रम संख्या	पदों का प्रकार	पदों की वर्गीकरण
1.	4,000/- रुपये और इससे अधिक बेतन या बेतनमाल बाला बोर्ड का कोई पद।	वर्ग "क"
2.	2,900/- रुपये या इससे अधिक किन्तु 4,000/- रुपये "ब"	ह, से कम बेतन या बेतनमाल बाला बोर्ड का
3.	1,150/- रुपये से अधिक किन्तु 2,900/- रुपये वर्ग "भ"	में कम बेतन या बेतनमाल बाला बोर्ड का कोई
4.	1,150/- रुपये या इससे कम बेतन या बेतनमाल बाला बोर्ड का कोई पद।	वर्ग "क"

भाग- III

नियोक्ता प्राधिकारी

5 सेवा के लिए नियुक्ति :—

भारता बोर्ड अधिनियम, 1986 की भारा- 4 की उपकारा (1) में उल्लिखित पदों के लिए नियुक्तियां मनुसूची में इस संबंध में विनियिष्ट ब्राधिकारियों द्वारा की जाएगी।

भाग - IV

नियमनाली

६ नियमनाली :—

(1) नियोक्ता प्राधिकारी या कोई अन्य प्राधिकारी, जिसके बहु अधीन है, अकाल मनुसूचीनिक प्राधिकारी या कोई अन्य प्राधिकारी, जिसे अध्यकाल द्वारा इस संबंध में अधिकाल किया गया हो, सामान्य या विवेच प्रादेश द्वारा नियमिति विनियमों में बोर्ड के किसी कर्मचारी को नियमनालीन रूप सकता है :—

(क) जहां उसके विलास कोई मनुसूचीनिक कार्यवाही चल रही हो अकाल अनियोजित हो, अथवा

(ख) जहां पूर्वोक्त प्राधिकारी के विवार में उसमें राज्य के मुख्यालियों पर प्रतिकूल प्रभाव टाकतें या वार्षिकनालों में भाग किया हो, अथवा

(ग) जहां किसी दण्डनीय अपराध के संबंध में उसके विलास कोई नामाला अव्यवेक्षण, प्रूलालाल अथवा जांच पड़सर के अधीन हो।

किन्तु यह मह है कि जहां नियमनाल का आदेश नियोक्ता अधिकारी से नियन्तर के किसी प्राधिकारी द्वारा अथवा अध्यक्ष द्वारा विशिष्ट प्राधिकार प्राप्त किए दिया जाता है, तो उस प्राधिकारी द्वारा में उत परिवितियों के संबंध में अध्यकाल को या संबंधित प्राधिकारी को संदूचित करेगा, जिसमें आदेश दिया गया या और की गई कार्रवाई के लिए संतुष्टोदय प्राप्त करेगा।

(2) बोर्ड के कर्मचारी को नियोक्ता प्राधिकारी के आदेश द्वारा नियमनालीन रूपा हुआ माना जाएगा :—

(क) यदि उमे 48 घंटों से अधिक अवधि तक किसी दण्डनीय अपराधन के कारण अथवा अन्यथा अभियान में रखा जाता है, तो उसकी मन्त्रवर्वदी यी तारीख से, अथवा

(ख) यदि किसी अपराध के लिए शोषसिद्धि की स्थिति में, उसकी 48 घंटों से अधिक अवधि के लिए कारावास की यजा हो जानी है और उस शोषसिद्धि के परिणाम स्वरूप उसे बाद में बद्धाल या पदचयन या अप्रियायत: सेवा नियुक्त नहीं किया जाता है, तो उसकी शोषसिद्धि की तारीख से।

स्पष्टीकरण :- इस उप विनियम के बंड (क) में उल्लिखित 48 घंटों की अवधि शोषसिद्धि के बाद कारावास के प्रारम्भ होने से यिनी जाएगी और इस प्रयोजन के लिए, कारावास की विवारी प्रवधियों, यदि कोई हो, हिमाय में ली जाएगी।

(3) जहां नियमनालीन बोर्ड के लिये कर्मचारी पर अधिरोपित सेवा से बद्धालगी, यद्युपति या अनियार्य सेवा नियुक्ति की आस्ति इन विनियमों के अधीन पुर्वावार करने पर या अपील किए जाने पर अपीलकार की जाती है और मामला पुर्वजाल या कार्रवाई के लिए अध्यकाल किन्तु अस्ति विवारों से स्थगित किया जाता है, तो उसके नियमनाल का आदेश बद्धालगी, पद अवृति या अनियार्य सेवा नियुक्ति के भूल आदेश की तारीख से लागू माना जाएगा और यह तब सक लागू होगा जारी नहीं हो जाती।

(4) जहां बोर्ड के किसी कर्मचारी पर अधिरोपित सेवा से बद्धालगी पद अवृति या अनियार्य सेवा-नियुक्ति की आस्ति विवारीयालम के परिणामस्वरूप अपीलकार कर वी जाती है या असाम्य शोषित कर दी जाती है, और अनुसूचीनिक प्राधिकारी उस आलोपों के आधार पर उसके विलास पुर्वजाल करने का लिये अध्यकाल किया जाता है, तो जिनके आधार पर उसके नियमनाल रूपा हुआ माना जाएगा और यह तब सक लागू होगा जारी किए जाते।

किन्तु वर्तं यह है कि इस प्रकार की किसी पुस्तकालय के साथेव तब तक नहीं विद् जाएंगे, जब तक कोई ऐसी सिविल न हो, जहां ज्ञानालय ने भास्त्रे के शुद्धारणा का गहन प्रयत्न किए विश्व ही विशुद्ध रूप से सक्तीकी मान्यताएँ पर आदेश पासित कर दिया हो।

(5) (क) इस विनियम के प्रतीक्षा विवाह या विवाह मान निवारण या कोई नियन्त्रण वाले तर तक साध्य रहेगा, जब तक कि सक्रम आधिकारी हाता उते आवोदित या रह नहीं कर दिया जाता।

(४) जहाँ बोई के लिये कर्मचारी को नियन्त्रित कर दिया जाता है प्रथमा नियन्त्रित किया जाने दिया जाता है (चाहे उसी अनुशासनिक कार्यवाही के अंतर्व से या अन्यथा) और उस नियन्त्रित के कार्यकाल के दौरान उसके लियाक बोई अनुशासनिक कार्यवाही कारबख्त हो जाती है, तो उसे नियन्त्रिताधीन रखने में सक्षम प्राप्तिकारी, लिखित में वज्र किए जाने वाले कारणों से वह नियंत्रण के सक्ता है कि बोई का कर्मचारी तब तक नियन्त्रिताधीन रहेगा, जब तक कि ये सभी अनुशासनिक कार्यवाहियों समाप्त नहीं हो जाती।

(ग) इस विविधतम के प्रधीन जारी किया गया या जारी किया या साक्षिया गया थोड़ा निलम्बन सावेद्र द्वारा उस प्राधिकारी, जिसने वहाँ सावेद्र जारी किया हो अथवा जिसके लिए यह मान लिया गया हो कि उसने प्रावेश जारी किया है, द्वारा प्रधान किसी गिरे प्राधिकारी द्वारा जिसके बहु प्राधिकारी प्रधीनत्व हो, किसी भी समय सापेक्षित प्रधान रद्द किया जा सकता है।

III V

शास्त्रीय एवं प्राकृतिक प्राधिकारी

२. शास्त्रियः - -

उचित पात्र पर्याप्त कारणों से तभी इसमें इसे भ्राते उल्लिखित कारणों से, बाईं के किसी कर्मचारी पर निम्नलिखित शास्त्रीय अधिरेपित की जा सकती है :-

गोण लालिमा :-

- (i) परिनिवास,
- (ii) उगकी पद्धोन्नति एक ने
- (iii) घारेलों का उत्तमयन या धोई को पहुँचाई गई धन उसके बेतन से बस्ती,
- (iv) बेस्तुवियों एक लेना,

मध्य शास्त्रियः

(v) किसी विलिंग्ड व्यवधि तक बेतन के समय मान में निवापन लार तक पदावनति, यह निर्देश देते हुए कि बोँड का कर्मचारी पदावनति की इस अप्रिं के दौरान बेतन बृद्धियों अतिन कर सकेगा या नहीं, और इस व्यवधि की गमापित पर, यह पदावनति उसकी भावी बेतनबृद्धियों को मुख्यी करेगी अथवा नहीं करेगी,

(vi) जिस प्रेष या पद ये होंड के कर्मचारी को पदावनन किया गया था, उस पर पुनः स्थापन नहीं उस प्रेष या पद पर पुनः स्थापन वीर वरिल्लना एवं बेलन की शर्तोंके संबंध में अगले नियम जारी करते हुए अधिकार न करते हुए बेलन, प्रेष या पद के नियन्त्रित सम्बन्धान तक पदावननि, और सामान्यतः उस पद प्रेष या पद के सम्बन्ध-मान के संबंध में होंड के कर्मचारी पदावननि के लिए रोप्त (कामावट) होंगी, जिससे उसे पदावननत हिल जाए।

- (vii) अपिवार्य सेवा मिशनी,
- (viii) सेवा से निष्काशन, जो बोर्ड के अधीन भारी रोकनार के लिए अधोगता थहीं मानी जाएगी,
- (ix) सेवा से वराहास्तारी जो बोर्ड के अधीन भारी सेवनार के लिए अधोगता मानी जाएगी :

सेकिन ऐसे प्रत्येक भाषण में बाण्ड (viii) या बाण्ड (ix) में उल्लिखित भास्ति विविरणित की जाएगी, जिसमें किसी सरकारी कार्ब को सम्पन्न करने का क्रिया लेने के लिए या सम्पन्न करने के लिए पुरस्कार या अधिकारण के रूप में, किसी व्यक्ति से विविक या वारिअधिक को छोड़कर कोई परिस्थिति प्राप्त करने का घारीप सिद्ध हो जाता है।

परन्तु मह और कि किसी अपवाहनको भाष्य से और लिखित भै दर्ज किए जाने वाले विविध कारणों से, कोई सच्च शास्त्र भी दास्तिशेषित की जा सकती है।

स्वार्थकरण :— इस विभिन्नम के भावन के अन्तर्गत विभिन्नविभिन्न की जास्ति नहीं भावा ज्ञात्या, प्रतीत—

(i) उत्तरी लिपुंगित की शब्दों या शेवा या पद, जिस पर वह कार्य कर रहा है, को मियकित करते बाले नियन्त्रों या भवितव्यों के अनुसार किए विभागीय परीक्षा को उत्तीर्ण करते में असफल हो जाने के कारण योर्ड के किसी कल्पनारी की वेतन-बढ़ियां रोक लेना,

(ii) रोष पार करने में उमसी अव्ययता के प्राप्ति पर वेतन के समय-मान में दक्षता-रोष पर बोझ के कमज़ोरी की रोक लेना।

(iii) मामले पर विचार करने के पश्चात, घोड़े के किमी कर्मचारी को उन ग्रेड या पद पर पदोन्नति न करता, जिस पर पदोन्नति के लिए वह हकदार है, जिसे ही वह मूल या स्थानापन्त रूप से काप्र कर रहा हो।

(iv) उच्च पद या बोड में स्थानायन्त्रण रथ से काव्य कर रहे योंड के किसी कार्यालयी का इस आधार पर निम्नतर बोड या पर दस्तावेज के लिए प्रश्नावली तंत्र कि उसे वर्णनान् उच्च बोड या पद पर काव्य करने के लिए अनुपयुक्त बोधना यथा है अधिकार उपके अधिकारण से सम्बद्ध किसी प्रशासनिक आधार पर उसे प्रश्नावली तंत्र किया गया है।

(V) उत्तरकी नियुक्ति को जल्दी की परिवेश को नियन्त्रित करने वाले निवालों और आवेदी के अनुसार, परिवेश प्रदूषित के दौरान वा अल्प में, परिवेश पर नियुक्त योर्ड के किसी कम्पनीरां का किसी अध्ययन पाए पर, उसके स्वार्थी होइ या पब्लिक प्रदूषित होइत.

(VI) श्रोते के जिय कर्मचारी की सेवाएँ किमी राज्य सरकार या केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार या केन्द्रीय सरकार के नियन्त्रण-घोन किमी भव्य प्राविकरण से क्रहण की गई थीं, उसकी सेवाओं का उस प्राविकरण के अन्तर्गत प्रतिष्ठापन, जिसने उसकी सेवाएँ प्रदान की थीं।

(vi) उसकी प्रशिक्षिता या मेवा-निवारि में संबंधित उपचारों के प्रकार और कंकाली को प्रशिक्षित करें।

(viii) (क) उपकी निवृत्ति को बताये या परिवेश को नियन्त्रित करने वाले विभागों और आवेदनों के अनुसार, उसको परिवेशोद्योगिता के होना या भल में, परिवेश परिवर्तन बोर्ड के किसी कामबारी की सेवाएं समाप्त करना, आयता

(ब) उसका नियुक्ति की घटी के प्रत्युत्तर, दोहं के अस्थायी कर्त-चारी की वेदात्म सम्बन्ध करना, प्रभावा

(ग) किए गए कागर की जाती के अनुसार, किसी करार के अधीन सेवा देने के लिये संबंधित सेवाएँ समाप्त करना।

8. अनुशासनिक प्राधिकारी :

(1) अध्यक्ष बोर्ड के लिये भी कर्तव्यों पर विनियम 2 में विनियम को भी सास्ति प्रधिरोधित कर सकता है।

(2) उप-विनियम (1) के उपलब्धों के प्रतिकूल प्रारम्भण किए जिन, विनियम-7 में विनियम को भी सास्ति प्रधिकारी द्वारा प्रयोग किया गया था अधिकारी द्वारा प्रधिरोधित की जा सकती है, जिसे बोर्ड के किसी सामाजिक या विशेष आवेदन का विवरण द्वारा इन संबंध में प्रधित किया गया हो और जो नियोजना प्राधिकारी से निम्न स्तर का न हो।

9. कार्यवाही प्रारम्भ करने के लिए प्राधिकारी

(1) अध्यक्ष या विनियम-9 के अधीन लिये सामाजिक या विशेष आवेदन का विवरण द्वारा प्रधिरोधित कोई अन्य प्राधिकारी—

(क) बोर्ड के किसी भी कर्तव्यों के लियाक अनुशासनिक कार्यवाही प्रारम्भ कर सकता है,

(ख) बोर्ड के उस कर्तव्यों के लियाक अनुशासनिक कार्यवाही प्रारम्भ करने के लिए अपने प्रध्यन्तर्थ अनुशासनिक प्राधिकारी को नियोजित की जा सकता है, जिस पर वह अनुशासनिक प्राधिकारी इन विनियमों के प्रध्यविनियम-7 में विनियम कोई भी सास्ति प्रधिरोधित करने के लिए जिसे सभी

(2) विनियम-7 के अप्प (1) से अप्प (iv) तक में विनियम कोई भी सास्ति प्रधिरोधित करने के संबंध में इन विनियमों के अधीन सकाम अनुशासनिक प्राधिकारी विनियम-7 के अप्प (5) से अप्प (15) में विनियम कोई भी सास्ति प्रधिरोधित करने के लिए बोर्ड के किसी भी कर्तव्यों के लियाक अनुशासनिक कार्यवाही प्रारम्भ कर सकता है, अले ही वह अनुशासनिक प्राधिकारी उन सास्तियों को प्रधिरोधित करने के लिए इन विनियमों के अधीन सकता न हो।

भाग VI

सास्तियों प्रधिरोधित करने की प्रक्रिया

10. मुक्त आस्तियों प्रधिरोधित करने को प्रक्रिया :

(1) अहम एक सम्बन्ध हो, इस विनियम और विनियम-II में उपविनियम पदार्थ के अनुसार जांच-पक्षाल करने के बाद जारी किए जाने वाले आवेदनों को छोड़कर, विनियम-7 के अप्प (V) से अप्प (IX) तक में विनियम कोई भी सास्ति प्रधिरोधित करने के लिए बोर्ड के किसी भी कर्तव्यों को प्रधिरोधित करने का आवेदन जारी किया जाएगा।

(2) अब भी अनुशासनिक प्राधिकारी का यह विनाश हो कि बोर्ड के किसी कर्तव्यों के लियाक तुर्यवहार या कदाचार से सम्बन्धित किसी भारोप को सत्यता के बारे में जांच करने के लिए पर्याप्त कारण विद्यमान है, तो वह उसकी स्वयं जांच कर सकता है, प्रयोग उसकी सत्यता की जांच के लिए इस विनियम के अन्तर्मान कोई प्राधिकारी नियुक्त कर सकता है।

सम्बोधण—जहां अनुशासनिक प्राधिकारी जांच प्राधिकारी की ओर से स्वयं ही जांच-पक्षाल करता है, तो इस विनियम के प्रयोग उपविनियमों में दिया गया कोई भी निर्देश अनुशासनिक प्राधिकारी को ओर से लिए गए निर्देश के रूप में माना जाएगा।

(3) यदि इस विनियम और विनियम-II के अन्तर्मान बोर्ड के किसी कर्तव्यों के लियाक जांच करने का प्रस्ताव किया जाता है, तो अनुशासनिक प्राधिकारी—

(i) भारोप की सुनिश्चित एवं नुस्खट मर्दों में तुर्यवहार या कदाचार से सम्बन्धित भारोपों का सार स्वयं लेखदृढ़ करेगा या उनके लेखदृढ़ किए जाने को अनुसन्धान करेगा,

(ii) भारोप के प्रत्येक मर्द के सम्बन्ध में तुर्यवहार या कदाचार से सम्बन्धित भारोपों का एक विवरण, जिसमें—

(क) बोर्ड के कर्तव्यों द्वारा स्वेच्छा लिए गए तथ्यों सहित, तथी अनुसन्धान तथ्यों का एक व्यौरा, तथा

(ख) उन दस्तावेजों और उन साक्षियों की एक-एक, सूची सामिल होंगी, जिनके द्वारा भारोप की मर्दों की रत्न्य प्रमाणित करने का प्रस्ताव किया गया है, की स्वयं लेखदृढ़ करेगा या उनके लेखदृढ़ किए जाने की अनुसन्धान करेगा।

(4) अनुशासनिक प्राधिकारी बोर्ड के कर्तव्यों के लिए भारोप भी मर्दों, तुर्यवहार या कदाचार से सम्बन्धित भारोप के विवरण तथा दस्तावेजों और साक्षियों की एक प्रति सुपुर्व करेगा, जिनके द्वारा भारोप की प्रत्येक मर्द द्वारा सत्य प्रमाणित करने का प्रस्ताव किया गया है और बोर्ड के कर्तव्यों से यह प्रयोग करेगा कि वह विनियम समय सीमा के प्रत्यंत प्रपत्ति प्रतिरक्षा के संबंध में लिखित विवरण प्रस्तुत करे और वह भी बदलाए कि वह प्रपत्ति इस समय में अधिकतम रूप से मुनावाई किए जाने की इच्छा रखता है या नहीं।

(5) (क) प्रतिरक्षा सम्बन्धी लिखित विवरण प्राप्त हो जाने पर अनुशासनिक प्राधिकारी भारोप को उन मर्दों से संबंध में स्वयं जांच भर सकता है, जिनमें स्वेच्छा नहीं किया गया है, भयवा यदि वह आवश्यक समझे, तो इस प्रयोजन के लिए उप-विनियम-2 के प्रधानों कोई जांच प्राधिकारी नियुक्त कर सकता है, और यदि बोर्ड के कर्तव्यों द्वारा प्रारम्भ कर सकता है, तो अनुशासनिक प्राधिकारी वह साथ, जिसे वह उचित समझे प्राप्त करने के बावजूद, प्रत्येक भारोप के संबंध में प्रपत्ति नियन्त्रण वर्जन करेगा और विनियम-12 में निर्धारित प्रतिरक्षा के अनुसार कारंबाई करेगा।

किन्तु यह यह है कि यदि कार्यवाही विनियम-7 के अन्तर्मान किसी आदेश के अनुपालन में आवश्यक की जाती है, तो कार्यवाही आवश्यक करने काला प्राधिकारी यदि वह अनुशासनिक प्राधिकारी नहीं है तो, आवश्यक समझे, तो उप-विनियम (2) के प्रधान इस प्रयोजन के लिए कोई जांच प्राधिकारी नियुक्त कर सकता है।

(ख) यदि बोर्ड के कर्तव्यों द्वारा प्रतिरक्षा संयोगी बोर्ड लिखित विवरण प्रदूष नहीं किया जाता है, तो अनुशासनिक प्राधिकारी भारोप की मर्दों के संबंध में स्वयं जांच कर सकता है, या, यदि वह आवश्यक समझे, तो उप-विनियम (2) के प्रधान इस प्रयोजन के लिए कोई जांच प्राधिकारी नियुक्त कर सकता है।

(ग) यदि अनुशासनिक प्राधिकारी भारोप की किसी मर्द के सम्बन्ध में स्वयं जांच करता है, या उस भारोप के सम्बन्ध में जांच करने के लिए किसी जांच प्राधिकारी की नियुक्त करता है, तो वह भारोप की मर्द के सम्बन्ध में आवश्यक करने के लिए “प्रस्तुतकर्ता प्राधिकारी” के रूप में बोर्ड के किसी कर्तव्यों की या किसी वकील की आदेश द्वारा नियुक्त कर सकता है।

(6) अनुशासनिक प्राधिकारी, जहां वह जांच प्राधिकारी नहीं है, जांच प्राधिकारी को निम्नलिखित दस्तावेज अपेक्षित करेगा—

(i) भारोप की मर्दों तथा तुर्यवहार या कदाचार के भारोपों से सम्बन्धित विवरण की एक प्रति,

(ii) बोर्ड के कर्तव्यों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रतिरक्षा सम्बन्धी लिखित विवरण, यदि कोई हो, एक एक प्रति,

(iii) उप-विनियम (3) के अप्प (ii) के उप-अप्प (ख) में नियमित साक्षियों से सम्बन्धित विवरण की एक प्रति,

(iv) बोर्ड के कर्तव्यों के लिए उप-विनियम (3) में नियमित दस्तावेजों की सुपुर्वी की प्रमाणित करने का वाला साथ, और

(v) “प्रस्तुतकर्ता प्राधिकारी” की नियुक्ति से सम्बन्धित आदेश की एक प्रति।

(7) बोर्ड का कर्मचारी जांच प्राधिकारी के सामने उत्तर दिन तथा उस समय स्वयं उपस्थित होगा, जिसे जांच प्राधिकारी इस सम्बन्ध में, लिखित भें नोटिस द्वारा विनिर्दिष्ट करेगा या उस आगामी समय के अन्वर (जो उस दिन से प्रार्थित न हो), जिसका अनुमति जांच प्राधिकारी द्वारा प्रदान की जाएगी।

(8) (क) यह तक कि अनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा नियुक्त प्रस्तुतकर्ता प्राधिकारी बर्किल न हो, या अनुशासनिक प्राधिकारी मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, अनुमति न दे, तब तक भोई का कर्मचारी अपनी ओर से मामला प्रस्तुत करेगे के लिए बोर्ड के किसी दूसरे कर्मचारी की सहायता तो ले सकता है, किन्तु इस प्रयोजन के लिए किसी एकल की नियुक्त नहीं कर सकता है।

इसांते यदि बोर्ड का कर्मचारी उस स्थिति में बोर्ड के किसी अन्य कर्मचारी की सेवायदा नहीं लेगा, यदि उसके पास वी अनुशासनिक मामले विषयार्थीन हों, जिनमें उसे सहायता प्रदान करती है।

(क) बोर्ड का कर्मचारी अपनी ओर से मामला प्रस्तुत करने के लिए बोर्ड के किसी सेवानिवृत्त कर्मचारी की भी सहायता ले सकता है, ही, किन्तु उन जर्ती के अवैतन, जिन्हें प्रार्थना द्वारा विनिर्दिष्ट किया जाए।

(9) यदि बोर्ड का वह कर्मचारी जांच प्राधिकारी के समक्ष उपस्थित होता है, जिसने प्रतिरक्षा सम्बन्धी अपने लिखित विवरण में आरोप की किसी भी मद की स्वीकार न किया हो, या जिसने प्रतिरक्षा सम्बन्धी कोई लिखित विवरण प्रस्तुत न किया हो, तो जांच प्राधिकारी उससे शूलेगा कि वह वह दोषों है, या क्या वह आरोप की मुछ करना चाहता है, और यदि वह आरोप की किन्हीं मदों के सम्बन्धी में आरोप अपराध स्वीकार करता है, तो जांच प्राधिकारी इस प्राधिकरण को वर्जन करेगा, इन्हें गए प्रार्थित वर प्रयोग सुनाकर करेगा तथा उस पर योर्ड के कर्मचारी के हस्ताक्षर कराएगा।

(10) जांच प्राधिकारी आरोप की उन मदों के सम्बन्ध में अपराध सम्बन्धी प्रतिरक्षा प्रस्तुत करेगा, जिनके लिए योर्ड का कर्मचारी अपना अवाय स्वीकार करता है।

(11) यदि योर्ड का कर्मचारी प्रतिरक्षा समय के अन्वर उपस्थित नहीं होता है, या अपराध स्वीकार करने से बचता है या इनकार करता है, तो जांच प्राधिकारी प्रस्तुतकर्ता प्राधिकारी से अपेक्षा करेगा कि वह, वह साथ प्रस्तुत करे, जिसके द्वारा वह आरोप की मदों को प्रमाणित करना चाहता है। तत्परतात, जांच प्राधिकारी आरोपी तारीख तक मामले को स्थगित कर देगा, जो तीस दिन से सांकेतिक बाद की नहीं होगी। उक्त कार्य करने से पहले, जांच प्राधिकारी इस प्रायोग का एक आवेदन जारी करेगा कि योर्ड का कर्मचारी प्रतिरक्षा संबंधी विवरण तैयार करने के प्रयोजन के लिए—

(i) आवेदन जारी होने के पांच दिन के अन्वर, या उस आगामी समयसीमा के अन्वर पांच दिन से सांकेतिक बाद की न होगी, जिसे जांच प्राधिकारी द्वारा निर्दिष्ट किया जाए, उपविनियम (3) के अन्तर्गत (i) के उपनिषद् (अ) में विनिर्दिष्ट एकी में दिए गए वस्तवावों का निरोक्षण कर सकता है, तथा

(ii) अपनी ओर से जांच किए जाने वाले साक्षियों की एक सूची प्रस्तुत कर सकता है।

टिप्पणी—यदि योर्ड का कर्मचारी उपविनियम (3) में विनिर्दिष्ट सूची में दिए गए साक्षियों से संबंधित विवरणों की प्रतियोगी प्रदान किए जाने के लिए लिखित में आवेदन करता है तो जांच प्राधिकारी उसे अनुमति-प्राप्ति उपलब्ध प्राप्ति प्रदान करेगा। ये सभी प्रतियोगी प्रार्थक मामले में अनुशासनिक प्राधिकारी की ओर से साक्षियों की जांच प्रारम्भ होने से पहले तीन दिन के अन्वर अवाय प्रदान करती जाएगी।

(iii) आवेदन जारी होने के 10 दिन के अन्वर या उस आगामी समयसीमा के अन्वर, जिस जांच प्राधिकारी द्वारा निर्दिष्ट किया जाए (जी 10 दिन से अधिक बाद की न होगी), उक्त वस्तवावों को भेजने या प्रस्तुत करने के लिए सूचना देना, जो योर्ड के कानून में है, किन्तु जिनका उल्लेख उपविनियम (3) में विनिर्दिष्ट सूची में नहीं किया गया है।

टिप्पणी—योर्ड का कर्मचारी अपनी सूचना में योर्ड द्वारा भेजे या प्रस्तुत किए जाने वाले अपने आवश्यक वस्तवावों की प्रासंगिकता के बारे में उल्लेख करेगा।

(12) वस्तवावों की बांजने या प्रस्तुत किए जाने के संबंध में सूचना प्राप्त होने पर, जांच प्राधिकारी, द्वारा तारीख तक वस्तवाव प्रस्तुत करने की मांग करते हुए, जिनका उल्लेख माना जाता है तिन्होंने योर्ड के कानून के अधिकारी या उनकी प्रतियोगी की उस प्राधिकारी के लिए प्रेरित करेगा, जिसकी अधिकारी या कब्जे में वस्तवाव रखे गए हैं।

लेकिन जांच प्राधिकारी निखिल में दर्ज किए जाने वाले कारणों से आवेदन में उल्लिखित उन वस्तवावों का प्रस्तुत करने में इनकार कर सकता है, जो उसके विचार में मामले से प्रासंगिक नहीं हैं।

13. उपविनियम (12) में निर्दिष्ट मांग-पत्र के प्राप्त होने पर, वह प्रत्येक प्राधिकारी, जिसकी अभिनवता या कब्जे में मांग-पत्र में उल्लिखित वस्तवाव रखे हैं, यदि योर्ड के कानून के अन्वरकर्ता प्राधिकारी के सूचित करेगा और जांच प्राधिकारी यह सूचना मिलने गए, योर्ड के कर्मचारी की यह सूचना प्रेरित करेगा तथा उन वस्तवावों को योर्डने या प्रस्तुत करने के लिए स्वयं द्वारा जारी किया गए मांग-पत्र को बापूत लेगा।

लेकिन, यदि वह प्राधिकारी, जिसकी अभिनवता या कब्जे में मांग-पत्र में उल्लिखित वस्तवाव रखे हैं, लिखित में दर्ज किए जाने वाले कारणों से सत्यपूर्ण है कि उन सभी या किन्हीं वस्तवावों को प्रस्तुत करना लोकहित या राज्य की सुरक्षा के प्रतिकूल होगा, तो वह तदनुसार जांच प्राधिकारी की सूचित करेगा और जांच प्राधिकारी यह सूचना मिलने गए, योर्ड के कर्मचारी की यह सूचना प्रेरित करेगा तथा उन वस्तवावों को योर्डने या प्रस्तुत करने के लिए स्वयं द्वारा जारी किया गए मांग-पत्र को बापूत लेगा।

14. जांच के लिए निर्वाचित की गई तारीख को अनुशासनिक प्राधिकारी की ओर से या स्वयं उसके द्वारा वे भौतिक एवं वस्तवावी साक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले कारणों से प्रमाणित किए जाने का किया गया प्रस्ताव है। जांचियों की जांच स्वयं प्रस्तुतकर्ता प्राधिकारी द्वारा या उसकी ओर की से जारी, जिसकी प्रति जांच स्वयं योर्ड के कर्मचारी द्वारा या उसकी ओर से की आ सकती है। प्रस्तुतकर्ता प्राधिकारी उन सभी मुद्राओं पर यांत्रिकों की पुनर्जीव करने के लिए हक्कदार होगा, जिन गए उन्होंने प्रतिज्ञाएँ की गई हैं, प्रस्तुत वह जांच प्राधिकारी की अनुमति के बिना, किसी नाएँ मामले में पुनर्जीव करने के लिए हक्कदार नहीं हैं। जांच प्राधिकारी साक्षियों से ऐसे प्रश्न भी पूछ सकता है, जिन्हें वह उपयुक्त समझे।

15. अनुशासनिक प्राधिकारी की ओर से मामला गमनाल होने से पहले यदि आवश्यक प्रतीक होगा, तो जांच प्राधिकारी, स्वायत्वेक में, प्रस्तुतकर्ता प्राधिकारी को वह साथ प्रस्तुत करने की अनुमति दे सकता है, जिसका उल्लेख योर्ड के कर्मचारी की दी गई सूची में नहीं किया गया है, या वह स्वयं एवं साथी की मांग कर सकता है या ये योर्ड की साक्षी की पुनर्जीव करने के लिए हक्कदार होता है, और ऐसी स्थिति में योर्ड के कर्मचारी की अनुमति के बिना, किसी नाएँ मामले में पुनर्जीव करने के लिए हक्कदार नहीं हैं। जांच प्राधिकारी साक्षियों से ऐसे प्रश्न भी पूछ सकता है, जिन्हें वह उपयुक्त समझे।

टिप्पणी:—साथ में किसी कमी को पूरा करने के लिए न तो नए साथ की प्रमुखता भी जाएगी न तथा साथ भी जाएगा और न ही किसी साक्षी को बापस भुलाया जाएगा। ऐसे, साथ केवल ही मार्ग जाएगा, जब साथ में कोई ऐसे प्रमाण या कोई ऐसी कमी हो, जिसे मूल रूप से प्रस्तुत किया गया हो।

16. जब अनुशासनिक प्राधिकारी की ओर से मामला समाप्त हो जाएगा, तो बोई के कम्बारी से यह अपेक्षित होगा, कि वह आपनी प्रतिरक्षा के लिए भीतिक या लिखित रूप में, जैसा भी वह चाहे, विवरण प्रस्तुत करे यदि प्रासरका ममताओं विवरण भौतिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है, तो उसे दर्ज कर लिया जाएगा और वज्र किए गए उस विवरण पर बोई के कम्बारी के हस्ताक्षर कराए जाएंगे। प्रत्येक मामले में प्रतिरक्षा सम्बन्धी विवरण की एक प्रति नियुक्त किए गए प्रानुशासनिक प्राधिकारी, मरि कोई हो, को भी भी जाएंगे।

17. इसके बाब बोई के कम्बारी की ओर से साथ प्रस्तुत किया जाएगा। यदि बोई के कम्बारी साथ प्रस्तुत करना चाहता है, तो वह अपनी ओर से स्वयं भी भर्ती भार्ति जांच करेगा। इसके बाद ही बोई के कम्बारियों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्षियों की जांच की जाएगी और तत्पश्चात अनुशासनिक प्राधिकारी या साक्षियों पर लागू जावन्धों के अनुसार जांच प्राधिकारी द्वारा उसकी प्रति जांच, पुनर्जीव और जांच की जाएगी।

18. बोई के कम्बारी द्वारा प्राप्त मामला तपाप्त कर दिए जाने के बाद, और यदि बोई के कम्बारी ने अपनी जांच न भी हो, तो जांच प्राधिकारी साथ में उसके प्रतिकूल प्रतीत होने वाली परिस्थितियों के सम्बन्ध में उसके सामन्य रूप से पूछताछ करेगा, जिसमें कि बोई का कम्बारी साथ में अपने प्रतिकूल प्रतीत होने वाली किसी भी परिस्थिति का सम्बन्धिकरण प्रस्तुत कर सके।

19. साथ सम्बन्धी विवरण प्रस्तुत कर दिए जाने के बाब, जांच प्राधिकारी प्रस्तुतकर्ता प्राधिकारी, यदि बोई नियुक्त किया गया हो, और बोई के कम्बारी की सुनकाई कर सकता है, या बोई को यदि वे जानते हों, अपने-अपने मामलों के लिखित मार करने की अनुमति प्रदान कर सकता है।

20. यदि बोई के कम्बारी, जिसे आरोप की मर्दों ने संबंधित विवरण की एक प्रति प्रदान की गई है, प्रतिरक्षा संबंधी अन्त लिखित विवरण इस प्रयोगन के लिए लिखित सारील को या उसके पहले प्रस्तुत नहीं करता। या जांच प्राधिकारी के समझ स्वयं अपत्तित नहीं होता, या, अप्पाया इस विनियम के उपर्योगों का अनुशासन नहीं कर याता, या, उनका अनुप्रश्नन करने से इनकार करना है, तो ऐसी परिस्थितियों में, जांच प्राधिकारी एकतरफा जांच आयोजित कर सकता है।

21. (क) जहाँ अनुशासनिक प्राधिकारी, जो विनियम-7 के खण्ड (i) से अवधि (iv) में लिखित लभी शाक्षियों प्रधिरोपित करने में सक्षम है, ने किसी आरोप की मर्दों के सम्बन्ध में स्वयं जांच भी ही या जांच करवायी हो, और वह प्राधिकारी, अन्त निजी भिन्नताओं भी अपने रखकर, या स्वयं द्वारा नियुक्त किए गए किसी जांच प्राधिकारी के लिक्कर्चरों के आधार पर अपने नियंत्रण को अपने में रखकर, अन्ती यह रूप प्रकार करता है कि विनियम-7 के खण्ड (v) से खण्ड (ix) तक में लिखित भास्तियों बोई के कम्बारी पर प्रधिरोपित कर दी जाएं, तो वह प्राधिकारी जांच संबंधी सभी रिकार्ड उस अनुशासनिक प्राधिकारी के लिए ब्रेफित करेगा, जो अन्त में उन्निति भास्तियों प्रधिरोपित करने में सक्षम है।

(क) जिस अनुशासनिक प्राधिकारी को ये रिकार्ड ब्रेफित किए गए हैं, वह साथ के संबंध में रिकार्ड के आधार पर करेवाई कर सकता है, या यदि उसका यह विकार हो कि न्याय-हितों का दृष्टि भी भास्तियों की बोई पुनर्जीव स्वयंकर है, तो वह भास्तियों की व्यवहा भुला, तकनी है और जांच कर सकता है, साक्षियों की प्रतिशब्दी भी और पुनर्जीव कर सकता है,

सभ्य बोई के कम्बारी पर वह सालिं अधिरोपित कर सकता है, जो उसे इस विनियमों के अनुसार अतीत होनी।

22. जब भी कोई जांच प्राधिकारी किसी जांच में जांच को पुर्णपूर्ण सांकेत दर्ज करते तथा उपने के बाब, अपनी अधिकारिता का प्रयोग नहीं करता है और उसके स्थान पर काहे द्वाया जांच प्राधिकारी कोई यहाँ करता है, जिसकी सम्भाल अधिकारिता है भीर जो उस अधिकारिता का प्रयोग करता है, तो उसरक्तीं जांच प्राधिकारी अपने प्रत्येकनी जांच प्राधिकारी है, तथा दर्ज किए गए साथ के आधार पर, या स्वयं द्वारा, जांच वज्र लिए गए साथ के आधार पर अपनी कार्रवाई कर सकता है :

लेकिन, यदि उसरक्तीं जांच प्राधिकारी का यह विवार हो कि न्यायहितों की दृष्टि से उस साक्षियों को कोई पुनर्जीव आवश्यक है, जिसके साथ पहले ही दर्ज किए गए चुके हैं तो वह उस साक्षियों को आपस द्वारा दर्ज करता है, जांच प्रतिवेद और पुनर्जीव कर सकता है, यथा कि इसमें इसमें पहले उन्नेक लिया जा चुका है।

23(i) जांच का नियम प्राप्त कर लेने के बाब एक रिपोर्ट तैयार की जाएगी जिसमें लिखित अस्तावेज शामिल किए जाएंगे :

(क) आरोप की मर्दी तथा सुर्खेहार या कशरवार के आरोपों से संबंधित विवरण,

(ख) आरोप की प्रत्येक मर्द के संबंध में बोई के कम्बारी का प्रतिरक्षा संबंधी विवरण,

(ग) आरोप की प्रत्येक मर्द के संबंध में साथ का निर्धारण,

(घ) आरोप की प्रत्येक मर्द के व्यवहार में नियमी तथा उसके कारण।

रिपोर्टीकरण :—यदि जांच प्राधिकारी के विवार में जांच को कार्रवाही आरोप की किसी मर्द को आरोप की मूल मर्दों से भूत स्थापित करती है, तो वह आरोप की उप मर्द के संबंध में भास्ति लियकरण कर सकता है :—

केविन आरोप की उस मर्द के संबंध में लियकरण तब तक वज्र नहीं किए जाएंगे, जब तक कि बोई के कम्बारी द्वारा उन तथ्यों की ईकाइ नहीं कर दिया जाता है जिन पर आरोप की वह मर्द भास्तिरित है, या जब तक बोई के कम्बारी को आरोप की उस मर्द के व्यवहार में भास्ति लियकरण करेगा।

(ii) जांच प्राधिकारी वज्र यह प्राधिकारी स्वयं अनुशासनिक प्राधिकारों नहीं है, जांच संबंधी रिकार्ड अनुशासनिक प्राधिकारी को अप्रेशित करेगा जिसमें लिखित अस्तावेज शामिल किए जाएंगे।

(क) खण्ड (i) के अधीन उसके द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट,

(ख) बोई के कम्बारी द्वारा प्रस्तुत किया गया प्रतिरक्षा संबंधी लिखित विवरण, यदि कोई हो,

(ग) जांच के द्वारा प्रस्तुत लिया गया मोहिक भीर अस्तावेजी साथ,

(घ) जांच के द्वारा प्रस्तुत कर्ता प्राधिकारी या बोई के कम्बारी द्वारा या दोनों के द्वारा काईल किए गए नियमित सार, यदि बोई हों, भीर

(ङ) जांच के संबंध में अनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा जांच प्राधिकारी द्वारा आरोपी किए गए नियमित सार, यदि बोई हों।

22. जांच रिपोर्ट पर कार्रवाई : (1) यदि अनुशासनिक प्राधिकारी स्वयं जांच प्राधिकारी नहीं है, तो स्वयं द्वारा लिखित में दर्ज किए जाने वाले कारणों से, मामले को पुनर्जीव और रिपोर्ट के लिए जांच प्राधिकारी को प्रेषित कर सकता है। जांच प्राधिकारी उस पर यात्रामध्ये लियम 10 के उपर्योगों में अनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा जांच प्राधिकारी करने के लिए कार्रवाई किए जाएंगे, यदि बोई हों।

(3) यदि भनुशासनिक प्राधिकारी आरोप की किन्हीं मर्दों के संबंधों में जांच प्राधिकारी के निष्कर्षों से सहमत नहीं हो, तो यदि उस असहमति के बारे में अपने कारण बर्ज कर सकता है और उस आरोप के संबंध में अपने निजी निष्कर्ष दर्ज कर सकता है, लेकिन ऐसा कभी किया जा सकता है अब इस प्रयोजन के लिए रिकार्ड के संबंध में पद्धति साक्ष भी नहीं हो।

(3) आरोप की सभी या किन्हीं मर्दों के संबंध में अपने निष्कर्षों की ध्यान में रखते हुए, यदि भनुशासनिक प्राधिकारी का यह विचार हो कि बोई के कर्मचारी पर विनियम-7 के बार्ड (i) के बार्ड (iv) तक में विनियिष्ट शास्त्रियों प्रधिरोपित की जाएं, तो वह विनियम 12 में वर्णित किसी बात के होते हुए भी उस आस्ति को प्रधिरोपित करने के लिए आवेदा जारी करेगा।

(4) आरोप के सभी या किन्हीं मर्दों के संबंध में अपने निष्कर्षों को ध्यान में रखते हुए यदि भनुशासनिक प्राधिकारी का यह विचार हो कि बोई के कर्मचारी पर विनियम-7 के बार्ड (V) से बार्ड (IX) तक में विनियिष्ट शास्त्रियों प्रधिरोपित की जाएं, तो वह उन शास्त्रियों को प्रधिरोपित करने के लिए आवेदा जारी करेगा और यह आवश्यक नहीं होगा कि बोई के कर्मचारी को प्रधिरोपित की जाने वाली शास्त्रियों के बारे में प्रत्यावेदन करने का अवधार प्रश्न लिया जाए।

12. गोण शास्त्रियों प्रधिरोपित करने की प्रक्रिया :

(1) विनियम-II के उप विनियम (3) के उपबन्धों के अधीन बोई के कर्मचारी पर विनियम-7 के बार्ड (i) से बार्ड (iv) तक में विनियिष्ट कोई भी शास्त्रिय प्रधिरोपित करने के संबंध में कोई भी तब तक आवेदा जारी नहीं किया जाएगा, जब तक कि

(क) बोई के कर्मचारी को उपके विनाक कार्यवाही करने के प्रस्ताव तथा कवाचार या बुर्जेश्वार के उन आरोपों के संबंध में विवित में सुनित नहीं किया जाता, जिन पर कार्यवाही करने का प्रस्ताव लिया गया है, और उसे उस प्रस्ताव के विरुद्ध अपना प्रत्यावेदन प्रस्तुत करने का अवधार प्रदान नहीं किया जाता,

(ख) जिन मामलों में भनुशासनिक प्राधिकारी का यह विचार हो कि दूर्जांच आवश्यक है, उसमें विनियम 10 के उप विनियम (3) से उप विनियम (23) तक में विधारित पद्धति से जांच आयोजित नहीं की जाती,

(ग) बार्ड (क) के अधीन बोई के कर्मचारी द्वारा प्रस्तुत किए गये विवरण, यदि कोई हो, और बार्ड (ख) के अधीन आयोजित जांच के विकारे यदि कोई हो, पर भनीचारी विचार नहीं कर लिया जाता,

(घ) बुर्जेश्वार या कवाचार के प्रत्येक आरोप के बारे में विधारित दर्ज नहीं कर लिया।

(2) उप विनियम (i) के बार्ड (ख) में वर्णित किसी आप के होते हुए भी, यदि उम उप विनियम के बार्ड (क) के अधीन बोई के कर्मचारी द्वारा प्रस्तुत किए गए किसी प्रत्यावेदन पर विचार करने के बाद यह प्रस्ताव किया जाता है कि बेतन वृद्धियों रीक वी जाएं थीर: ऐसी बेतन वृद्धियों रीकों से बोई के कर्मचारी को देय पेशन राया पर अधिकाल प्रभाव पड़ता ही, या यह प्रस्ताव किया जाता है कि सौन बर्ब से अधिक प्रधावि के लिए बेतन वृद्धियों रीक वी जाएं, या ऐसी किसी अधिक तक बेतन वृद्धियों रीक वी जाएं, जिसका संबंधी प्रधाव प्रझता ही, तो बोई के कर्मचारी पर ऐसी शास्त्रिय प्रधिरोपित करने के संबंध में आवेदा जारी करने से पहले विनियम 10 के उप विनियम (3) से उप विनियम (23) तक में विधारित पद्धति से जांच आयोजित की जाएगी।

(3) ऐसे मामलों में की जाने वाली कार्यवाहियों से संबंधित रिकार्ड में विनियिष्ट इलावेज संक्षिप्त होते।

(i) बोई के कर्मचारी को प्रदल उसके विनाक की जाने वाली कार्यवाही के प्रस्ताव से संबंधित सूचना की एक प्रति,

(ii) बोई के कर्मचारी को प्रदल बुर्जेश्वार या कवाचार के आरोपों से संबंधित विवरण की एक प्रति,

(iii) कर्मचारी का प्रत्यावेदन परि कोई हो,

(iv) जांच के दौरान प्रस्तुत किया गया साथ,

(v) बुर्जेश्वार या कवाचार के प्रत्येक आरोपों के संबंध में लिया गया निष्कर्ष और

(vi) मामले के संबंध में जारी किए गए आदेश और उनके कारण।

13. आवेदा की संसूचना भनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा जारी किए गए आवेदों की संसूचना बोई के कर्मचारी को प्रदान की जाएगी, जिसे भनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा आयोजित जांच यदि कोई हो, जो रिपोर्ट की एक प्रति तथा आरोप की प्रत्येक मद के संबंध में लिए गए एक निष्कर्ष की एक प्रति भी प्रदान की जाएगी, या यह भनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा जांच प्राधिकारी नहीं है, वह जांच प्राधिकारी की रिपोर्ट की एक प्रति तथा भनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा लिए गए निष्कर्षों का एक विवरण, जिसमें जांच प्राधिकारी द्वारा लिए गए निष्कर्षों से उसकी असहमति के कारणों का संक्षेप में उल्लेख होगा, जो बोई के कर्मचारी को प्रवास किए जाएंगे, बार्ने कि ये बलावेज उसे पक्ष्मे ही प्रदान न किए गए हों।

14. सामन्य कार्यवाहियों (i) यदि किसी मामले में बोई के दो या दो से अधिक कर्मचारी अभियन्ति हों, तो अधवाय या कोई अन्य प्राधिकारी, जो बोई के देसे राखी कर्मचारियों पर सेवा में बास्तीसी की शास्त्रिय प्रधिरोपित करने में सक्षम है, यह विवेद देसे हुए आवेदा जारी कर सकता है कि उन सभी कर्मचारियों के विनाक मामाक नार्यवाही के रूप में भनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है।

टिप्पणी :— यदि वे प्राधिकारी, जो बोई के देसे कर्मचारियों पर सेवा में बास्तीसी की शास्त्रिय प्रधिरोपित करने में सक्षम है, अलग-अलग हैं, तो मामान्य कार्यवाही के रूप में भनुशासनिक कार्यवाही किए जाने से मंजुरित आवेदा अन्य प्राधिकारियों की महत्वति से, उनमें से उच्चतम प्राधिकारी द्वारा जारी किया जा सकता है।

(2) ऐसे किसी भी आवेदों में विनियिष्ट का विवेद रूप से उल्लेख किया जाएगा :—

(i) वह प्राधिकारी जो ऐसी सामान्य कार्यवाही के प्रयोगन के लिए भनुशासनिक प्राधिकारी के रूप में कार्य कर सकता हो,

(ii) विनियम-7 में विनियिष्ट वे शास्त्रियों, जिन्हें वह भनुशासनिक प्राधिकारी प्रधिरोपित करने के लिए सक्षम होंगा,

(iii) कार्यवाही करते समय, विनियम-10 और विनियम-11 या विनियम 12 में विधारित प्रक्रिया का अनुपासन किया जाएगा अध्यवा नहीं।

15. कलिय मामलों में आपनारी जाने वाली विशेष प्रक्रिया : विनियम 10 में विधित किसी बात के होते हुए भी —

(i) यदि किसी ऐसे प्राप्तरण के आधार पर बोई के किसी कर्मचारी पर कोई शास्त्रिय प्रधिरोपित की जाती है, जिसके दारण उसे किसी आपराधिक प्रभाव के लिए दोही छहराया गया हो, अध्यवा

(ii) यदि भनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा विवित में वर्ज किए जाने वाले कारणों से सन्तुष्ट हो कि इन विनियमों में विधारित की गई पद्धति से जांच आयोजित करना यथोचित रूप से व्यवहार्य नहीं हो, अध्यवा

(iii) यदि बोई, केन्द्रीय सरकार के परामर्श से उत्तुष्ट हो कि राज्य के बुरका हितों की वृद्धि से इन विनियमों में विधारित की गई पद्धति के भनुसार जांच आयोजित करना लाभकार नहीं है, तो भनुशासनिक

प्राधिकारी मामले की परिस्थितियों पर विचार कर सकता है और उसके संबंध में ऐसे आवेदन जारी कर सकता है, जिन्हें वह उपर्युक्त समझे।

16. जिन भ्रातिकारियों की सेवाएं सरकारों भ्राति को उधार नी गई हैं, उनके सम्बन्ध में उपबन्ध :

(i) बोई के किसी कर्मचारी की सेवाएं सरकारों को या उनके किसी अधीनस्थ प्राधिकरण को या किसी स्वानीय या अन्य प्राधिकरण (जिसे इस विनियम में इससे जाने "उधार लेने वाला प्राधिकरण" कहा गया है) को उधार दी जाती है, तो उधार लेने वाले प्राधिकरण को उस कर्मचारी को निलंबनाधीन रखने के लिए नियोजन कर्त्ता प्राधिकारी की तपा उसके द्विलाप अनुशासनिक कार्यवाही किए जाने के प्रयोजन के लिए अनुशासनिक प्राधिकारी की प्रतियोगी प्राप्त होंगी।

अर्थात् कि उधार लेने वाला प्राधिकरण, बोई के कर्मचारी की सेवाएं उधार देने वाले प्राधिकरण जिससे इस विनियम में इसे आगे उधार देने वाला प्राधिकरण कहा गया है, को यात्यस्थिति बोई के उस कर्मचारी के निलंबनादेश जारी किए जाने की परिस्थितियों के संबंध में या अनुशासनिक कार्यवाही आरम्भ किए जाने के बारे में तुरन्त सूचित करेगा

(2) बोई के कर्मचारी के द्विलाप की गई अनुशासनिक कार्यवाही के नियमों को ध्यान में रखते हुए :—

(i) यदि उधार लेने वाले प्राधिकरण का यह विचार हो कि विनियम-2 के अंग (i) से अंग (iv) तक में विनियिष्ट शास्त्रियों बोई के कर्मचारी पर भ्रिरोपित की जानी चाहिए, तो वह उधार देने वाले प्राधिकरण से परामर्श करने के बाब्त ही उस मामले में ऐसे आवेदन जारी कर सकता है, जिन्हें वह आवश्यक समझे :

अर्थात् कि उधार लेने वाले प्राधिकरण और उधार देने वाले प्राधिकरण के बीच भ्रातिय हो जाने की स्थिति में, बोई के कर्मचारी की सेवाएं उधार देने वाले प्राधिकरण के प्रधीन प्रतिस्थापित की जाएंगी

(ii) यदि उधार लेने वाले प्राधिकरण का यह विचार हो कि विनियम-2 के अंग (v) से अंग (ix) तक में विनियिष्ट शास्त्रियों बोई के कर्मचारी पर है भ्रिरोपित की जानी चाहिए, तो वह उधार देने वाले प्राधिकरण के अधीन उनकी सेवाएं प्रांतस्थापित करेगा और उसे जाच सम्बन्धी कार्यवाहियों का रिकाउं इस्तान्तरित करेगा, जिससे कि वह ऐसी कार्रवाई कर सके, जिसे वह इस सम्बन्ध में आवश्यक समझे :

स्पष्टीकरण :— अनुशासनिक प्राधिकारी उधार लेने वाले प्राधिकरण द्वारा इस्तान्तरित की गई कार्यवाहियों के रिकाउं के आधार पर इस उपविनियम के अधीन आवेदन जाहा तक ही सके विनियम-10 के अनुसार ऐसी पुनर्जीवन आव्योधित करने के बाब्त जिसे वह आवश्यक समझे, आवेदन जारी कर सकता है।

17. जिन भ्रातिकारियों की सेवाएं सरकार भ्राति से उधार नी गई हैं, उनके सम्बन्ध में उपबन्ध :

(1) यदि किसी ऐसे कर्मचारी के द्विलाप अनुशासनिक कार्यवाही की जाती है या निलंबनादेश जारी किया जाता है जिसकी सेवाएं किसी सरकार से या सरकार के किसी अधीनस्थ प्राधिकरण से या किसी स्वानीय या अन्य प्राधिकरण से उधार नी गई है, तो उसकी सेवाएं उधार देने वाले प्राधिकरण की जिसे इस विनियम में इससे जाने "उधार देने वाला प्राधिकरण" कहा गया है यात्यस्थिति निलंबनादेश जारी किए जाने की परिस्थितियों के बारे में या अनुशासनिक कार्यवाही आरम्भ किए जाने के बारे में तुरन्त सूचित किया जाएगा।

(2) बोई के कर्मचारी के द्विलाप को यह अनुशासनिक कार्यवाही के नियमों को ध्यान में रखते हुए यदि अनुशासनिक प्राधिकारी का यह विचार हो कि विनियम 7 के अंग (i) से अंग (iv) तक में विनियिष्ट शास्त्रियों बोई के कर्मचारी भ्रिरोपित की जानी चाहिए, तो वह विनियम-11 के उपविनियम-27 के उपबन्धों के अधीन उन सभी उधार देने वाले प्राधिकरण से परमर्श करने के बाब्त उस मामले में आवेदन पासित कर सकता है, जिन्हें वह आवश्यक समझे।

मानते हैं कि :

(i) उधार लेने वाले प्राधिकरण और उधार देने वाले प्राधिकरण के बीच भ्रातिय हो जाने की स्थिति में कर्मचारी की सेवाएं उधार देने वाले प्राधिकरण के प्रधीन प्रतिस्थापित की जाएंगी,

(ii) यदि अनुशासनिक प्राधिकारी का यह विचार हो कि विनियम-7 के अंग (v) से अंग (ix) तक में विनियिष्ट शास्त्रियों कर्मचारी पर भ्रिरोपित की जानी चाहिए, तो वह उधार देने वाले प्राधिकरण के अधीन उस कर्मचारी की सेवाएं भ्रिरोपित करेगा और उसे जाच सम्बन्धी कार्यवाहियों का रिकाउं इस्तान्तरित करेगा, जिससे कि वह ऐसी कार्रवाई कर सके, जिसे वह इस सम्बन्ध में आवश्यक समझता है।

भाग-VII

शपील

वे आवेदन जिनके विषय कोई शपील नहीं भी जा सकती :

इस भाग में वर्णित किसी बात के होते हुए भी, मिलमिलित आवेदनों के विषय कोई शपील नहीं की जाएगी :—

(i) केंद्रीय सरकार द्वारा जारी किया गया कोई आदेश,

(ii) निलंबनादेश को छोड़कर, बादकालीन प्रहृति का कोई आवेदन या सहायक उपाय की प्रहृति का कोई आदेश, या अनुशासनिक कार्यवाही के अन्तिम निपटारे से सम्बद्धित कोई आवेदन,

(iii) विनियम-10 के अधीन जांच के दौरान जांच प्राधिकारी द्वारा पारित किया गया कोई आदेश।

18वें आदेश जिनके विषय अपील की जा सकती है :

विनियम-18 के उपबन्धों के अधीन नोई का कर्मचारी नियमित सभी आवेदनों या प्रत्येक आदेश के विषय अपील कर सकता है :

(i) विनियम-8 के अधीन जारी किया गया या जारी किए गए के रूप में जान किया गया कोई निलंबनादेश।

(ii) विनियम-7 विनियिष्ट शास्त्रियों भ्रिरोपित किए जाने से सम्बद्धित कोई आदेश, भले ही उसे अनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा जारी किया गया ही अथवा किसी पुनरीकारण प्राधिकारी द्वारा जारी किया गया ही अथवा किसी शास्त्रिय को बड़ा,

(iii) विनियम-7 के अधीन भ्रिरोपित किसी शास्त्रिय को बड़ा;

(iv) ऐसा आदेश जिसमें :

(क) उसे नुकसान पहुँचाने के लिए करार या विनियमों में यात्यस्थिति परिवर्तन उसके बेदाम, भर्ती, पेशन या सेवा की अन्य गलती को घस्तीकार करने या उनमें परिवर्तन करने की बात कहीं गई हो, अथवा

(ख) उस करार या उन विनियमों के उपबन्धों की अन्यथा उसे नुकसान पहुँचाने की धृष्टि से की गई हो,

(v) ऐसा आदेश जिसमें :

(क) रोड पार करने के लिए उसकी अयोग्यता के आधार पर उसे सम्बन्ध बेशमान में इक्षतारोध पर रोक लेने की बात कहीं गई हो,

(क) फिसी उड़ानवर में, ये या पद पर स्थानांश करने समय जैसे, शारीर अधिरोपित करने से मन्दिर, किसी निम्नांश मेंवा, ये या पद पर प्रसारावलित करने की बात कही गई हो;

(ग) नियमों के प्रधान उम्मेद लिए शीकाये अधिकतम पेशन शीकाये त करने या पेशन रोक देने या पेशन में दृष्टीनी करने की बात कही गई हो;

(घ) नियमन अधिक के लिए या उम्मेद के लिए जिसके दौरान उस नियमनाधीन साजा गया है, या नियमन अधिक के किसी भाग के लिए उसे प्रदान किए जाने वाले निर्वाह भर्ते और मन्य भ्रमों के निर्धारण की जात कही गई हो;

(ज) (i) नियमन प्रवधि के लिए या

(ii) मेवा के बखूस्तनी, पश्चृष्टि या अनिवार्य मेवानिकृति की नारीख से बाद की प्रवधि के लिए प्रवधा किसी नियमन के लिए जैव-पर, सम-वेतनमान या समय-वेतनमान की किसी अवस्था पर उसके पदावनयन की नारीख से उसकी मेवा, ये या पद पर सेवाएं पुनः जाल किए जाने या पुनः स्थान की नारीख तक उसका वेतन और भ्रम निर्धारित करने की बात कही गई हो, या

(च) इम तर्फ के नियरिति की बात कही गई हो कि उसके नियमन की नारीख से, यह सेवा से उसकी बखूस्तनी, पश्चृष्टि या प्रवधियां नेवा-निकृति की नारीख से बाद की प्रवधि की, प्रवधा किसी नियमन सेवा, ये-पर, सम-वेतनमान या समय-वेतनमान की किसी अवस्था पर उस पदावनयन को नारीख से उसकी मेवा, सेवा, ये या पद पर सेवाएं पुनः जाल किए जाने या पुनः स्थान की नारीख तक उसकी प्रवधि की किसी भी प्रवोजन के लिए इयूटी पर अन्योन की गई अवधि के रूप में भावा जाग़ा या नहीं।

स्पष्टीकरण : इम नियम में—

(i) “बोर्ड का कर्मचारी” प्रविधियां में वह अवधि भी शामिल है, जो अब बोर्ड की सेवा में नहीं है, विचार करेगा कि बोर्ड की सेवा में नहीं है;

(ii) “पेशन” प्रविधियां में प्रतिरिक्षण पेशन, उपयोग तथा अन्य मेवानिकृति साम भी शामिल हैं।

20. अपील अधिकारी

(1) बोर्ड का कर्मचारी, जिसमें वह अधिक भी शामिल है, जो अब बोर्ड की सेवा में नहीं है, विचार करेगा कि विनियमन में विनिरिक्षण सभी प्रादेशों या किसी प्रादेशों के विशुद्ध प्रान्तुची से इस संस्कृत में विनिरिक्षण अधिकारी को अधीन कर सकता है।

(2) उप विनियम (1) में वर्णित किसी दाता के होने हए भी—

(i) विनियम-14 के अधीन आयोगित किया सामने राय-बाही में सम्बन्धित आयोग के विशुद्ध अपील उम्मेद अधिकारी के पास की जाएगी, जिसके वह अधिकारी संभव अधीन है, जो उम्मेद आयोगी के प्रयोगन के लिए अनुशासनिक प्राधिकारी के रूप में कार्य कर रहा है;

(ii) वह अधिक विषये पर आयोग जारी किया था जिसके विशुद्ध अपील की गई है, अपनी मनुष्यों नियुक्ति के ताते या अन्यथा यदि उम्मेद आयोग के सम्बन्ध में अपील अधिकारी बन जाता है, तो तेसे आयोग के विशुद्ध अपील उम्मेद अधिकारी के पास की जाएगी, जिसके वह अधिक नीवे अधीन है।

3. बोर्ड का कर्मचारी विनियम-7 में विनिरिक्षण अधिसंघों के अधिकारण में संबंधित किसी आयोग के विशुद्ध केन्द्रीय सरकार में अपील कर

सकता है। जहाँ उप-विनियम (1) या उप-विनियम (2) के अधीन उम्मेद अधिकारों के पास दैसी बोर्ड अधीन नहीं की जा सकती है, यदि वह शास्त्र बोर्ड के किसी प्राधिकारी द्वारा बोर्ड के उम्मेद कर्मचारी पर किसी सेवा भगान के स्वयं में बोर्ड द्वारा मानवता, प्राप्त किसी सह्य, प्रश्न या यनियत के पदावारी के लिए में, उसके हार्दि से सर्वाधिक उम्मेद किसी-किसी के सम्बन्ध में अधिरोपित की जाती है।

21. अपील के लिए परिमोमन-मर्शिय

इस भाग के वधीन की गई किसी भी संघीय पर तब तक कोई विचार नहीं किया जाएगा, जब तक कि वह अपील अधीन कर्ता की गई उम्मेद अवैश की प्रति जिसके विशुद्ध वह अपील कर रहा है, का प्रतिक्रिया लाइब्रेरी में 45 दिन की प्रवधि के प्रदर्शन की गई हो।

येकिन अपील अधिकारी उम्मेद प्रवधि के समाप्त हो जाने के बाद भी अपील पर विचार कर सकता है, यदि वह इस तथा संस्कृत में किसी अधीनकर्ता के पास अपील पर अपील न करने के लिए परिषिकारण भीन्ना हो।

22. अपील का रूप और मन्यरूपः

(1) परीक्षा करने जाना प्रवेद्य अस्ति ग्रामे नाम से तथा ग्राम-पत्रक रूप से अपील करेगा।

(2) अपील उम्मेद प्रवधिकारी को प्रस्तुत की जाएगी, जिसकी अपील की जाती है। अपीलकर्ता द्वारा अपील की एक प्रति उम्मेद प्रवधिकारी के लिए अप्रेगित की जाएगी, जिसने वह प्रादेश जारी किया था जिसके विशुद्ध अपील की गई है। अपील में सारांशन कथनों और तर्क विवरों का उल्लेख किया जाने वाहिल, जिन पर अपीलकर्ता लिखें करता है। अपील में किसी भी प्रकार की अपमानजनक या मनवित भावों का प्रयोग नहीं किया जाएगा तथा अपील स्वर्ण में पूर्ण होती।

(3) वह प्रवधिकारी जिसने वह प्रादेश जारी किया था जिसके विशुद्ध अपील की गई है, अपील की प्रति प्राप्त होने पर, जिसे किसी परिषिकारण विनियम के तथा अपील अविहारी से किसी निवेद्य की प्रतीक्षा किए जाना, अपेक्षा पर अपनी दिप्पणियों करने वाले सुरक्षा दस्तावेजों के साथ उपरोक्त प्रतिवार्ता के लिए अप्रेगित करेगा।

23. अपील पर विचार करना

1. नियमनादेश के विशुद्ध अपील के मामते में, अपील अधिकारी यह विचार करेगा कि विनियम-6 के उपरांतों के प्राकार पर तथा प्राप्तवेदन के अपील अविहारी से किसी निवेद्य की प्रतीक्षा किए जाना, अपेक्षा पर अपनी दिप्पणियों करने वाले सुरक्षा दस्तावेजों के साथ उपरोक्त प्रतिवार्ता के लिए अप्रेगित करेगा।

2. विनियम-7 में विनिरिक्षण अधीनों के अधिरोपित से संबंधित किसी आयोग के विशुद्ध अपील के मामते में, या उम्मेद विनियम के अधीन अधिकारी जारी के बाहर आये के मामते में, अपील अधिकारी यह विचार करेगा कि—

(क) इन विनियमों में विनिरिक्षण प्रक्रिया का अनुपाल रुक्षा किया गया है या नहीं, और यदि नहीं, तो क्या भारत के भविधान के उपर्युक्त उन्नेशन करके या भनोच्चत्तरूपी रूप में उम्मेद अनुपाल नहीं किया गया है।

(ख) अनुशासनिक प्राधिकारी के विकार्ड रिकार्ड पर साक्ष द्वारा आर्टिफिशियल है या नहीं और

(ग) प्रधिरूपित शास्त्र या अधिरूपित बहायी गई शास्त्र उचित है, अनुचित है या मद्दत है।

और ऐसे आदेश पारित करेगा जिनमें—

- (i) शास्ति की पुष्टि करने, शास्ति बढ़ाने, या मामले करने का उल्लेख होगा, प्रथम।
- (ii) तेसे विनियोग के माध्यम से वह मामले को मधीं परिस्थितियों में उपयुक्त समझे, मामले को उस प्राधिकारी के लिए जिसने शास्ति प्रधिरोपित को या बढ़ायी या घटाये के किसी अन्य प्राधिकारी के लिए प्रेषित किए जाने का उल्लेख होगा : यहाँते कि—
- (i) यदि वह बढ़ायी गई शास्ति जिसे प्रधिरोपित करने का प्रस्ताव प्रधीन प्रधिकारी ने किया है विनियम-7 के लाई (v) से लाई (ix) तक में विनियोग शास्तियों में से एक हो और उस मामले में विनियम 10 के प्रधीन पहले ही कोई जांच न की गई है, तो अपील प्रधिकारी विनियम-15 के उपबन्धों के अधीन सबंध वह जांच करेगा, या निर्देश देगा कि विनियम-10 के उपबन्धों के अनुसार वह जांच की जाए और बापूजी उस जांच की कार्यवाहियों पर विचार करने के बाद ऐसे आदेश जारी करेगा, जिन्हें वह उचित मानते हैं।
- (ii) यदि वह बढ़ायी गई शास्ति जिसे प्रधिरोपित करने का प्रस्ताव अपील प्रधिकारी ने किया है विनियम-7 के लाई (v) से लाई (ix) तक में विनियोग शास्तियों में से एक हो, और उस मामले में विनियम 10 के प्रधीन पहले ही कोई जांच आदेशित की जा चुकी हो, तो अपील अधिकारी ऐसे आदेश जारी करेगा, जिन्हें वह उचित मानते हैं, और
- (iii) बढ़ायी गई शास्ति प्रधिरोपित करने से मंबंधित कोई आदेश किसी दूसरे मामले में तब तक किया जाएगा जब तक कि, यदि अस्तव विनियम 12 के उपबन्धों के अनुसार, अपीलकर्ता को उस बढ़ायी गई शास्ति के बिल्द प्रस्तावन करने का उचित अवसर प्रदान नहीं किया जाए।

3. विनियम 19 में विनियोग किसी अन्य आदेश के बिल्द अपील किया जाने पर, अपील प्रधिकारी मामले की सदी परिस्थितियों पर विचार करने और ऐसे आदेश जारी करेगा, जिन्हें वह उचित गंभीर अवसंगत मानते हैं।

24. अपील संबंधी आदेशों का परिवर्तन :— वह प्राधिकारी, जिसमें वह आदेश जारी किया या जिसके बिल्द अपील को गई है, अपील प्रधिकारी द्वारा पारित आदेशों को प्रभावी करेगा।

भाग -VII

पुनर्विनाय एवं पुनर्विनायक

25. केन्द्र सरकार के पुनर्विनाय शायिदः—(i) इन विनियोगों में विनियोग किसी बात के हृते हुए और, जेन्ट्रीय सरकार किसी भी मामले, अपने प्रस्ताव के आधार पर अन्यथा, मामले का विकार मानती है, इन विनियोगों के अपील या विनियम 29 जिसके अंतर्गत अपील को प्रतुमति प्रदान की गई है, जिन्हें जिसके अंतर्गत कोई अपार्ट नहीं की गई है, या जिसके अंतर्गत कोई अपील नहीं की जा सकती, द्वारा नियम किए गए विनियोगों अधार जारी किए गए आदेश को परिवर्तित कर सकती है, और

क. किसी आदेश को पुष्टि कर सकती है, उसे प्रधानमंत्री द्वारा सकती है या समाप्त कर सकती है, या

क. आदेश द्वारा प्रधिरोपित शास्ति को पुष्टि कर सकती है, शास्ति कम कर सकती है, उसे बढ़ा सकती है या समाप्त कर सकती है, या जहाँ कोई शास्ति प्रधिरोपित नहीं की गई है, वह शास्ति प्रधिरोपित कर सकती है ; या

ग. मामले को उस प्राधिकारी के लिए प्रेषित कर सकती है जिसने आदेश जारी किया था, या उसे किसी अन्य प्राधिकारी के लिए प्रेषित कर सकता है यह नियम द्वारा देते हुए कि वह ऐसा पुनर्जीव अधिकारी को जिसे वह मामले को परिवर्तित किया अनुमति देता है ; उचित मानता है ;

घ. ऐसे अन्य आदेश प्राधिकारी द्वारा देते हुए जिनमें वह उचित मानते हैं

इनमें कि शास्ति प्रधिरोपित किए जाने या शास्ति बढ़ाए जाने से मंबंधित कोई भी प्रादेश पुनर्विनाय प्रधीनकारी द्वारा नष्ट तक जारी न किया जाता, जब तक कि बोर्ड के मंबंधित कर्मचारी को प्रस्तावित आदिन के विनाय कोई प्रत्यावेदन करने का उचित अवसर प्रदान नहीं किया जाता, और यदि विनियम-7 के लाई (v) से लाई (ix) तक में विनियोग शास्तियों में अधिरोपित किए जाने या उस लाई (ix) में विनियोग शास्तियों को परिवर्तित किए जाने के लिए जारी किए गए आदेश द्वारा प्रधिरोपित शास्ति को बढ़ाने के लिए प्रस्ताव किया जाता है, और यदि उस मामले में विनियम-10 के प्रधीन पहले ही कोई जांच न की गई हो, तो ऐसी कोई शास्ति नष्ट तक प्रधिरोपित नहीं की जाएगी यदि जब तक कि विनियम-15 के उपबन्धों के प्रधीन पहले ही कोई जांच न की जाएगी तो यह और कि पुनर्विनाय की शास्तियों का प्रयोग विनियम-19 के लाई (iv) में विनियोग आदेशों के मंबंधित भी किया जा सकता है ।

26. अन्यथा को पुनर्विनायक की शक्ति :— अन्यथा प्रधने प्रधीनस्थ किसी प्रधिकारी द्वारा इन विनियोगों के प्रधीन की गई प्रत्यावर्तनिक कार्यवाही के मंबन्ध में, अपने निजी प्रस्ताव के आधार पर अन्यथा अन्यथा, मामले के रिकार्ड की मांग कर सकता है, ऐसे मामले में परिवर्तित किए गए आदेश को पुनर्विनायक कर सकता है और ऐसे आदेश प्रारित कर सकता है, जिन्हें वह उचित मानते हैं इस भाव के माध्यम साने बोर्ड के कर्मचारी ने उस प्रावित के बिल्द उसके पास अपील की है ;

लेकिन इम विनियम के प्रधीन पुनर्विनायक की शक्तियाँ का प्रयोग विनियम-19 के लाई (iv) में विनियोग प्रादेशों के मंबन्ध में भी किया जा सकता है ।

लिन्यु यह और कि पुनर्विनायक किए जाने जाने पार्टिकल की भारतीय से भी महीने से अधिक प्रबंधि के बाद इम विनियम के प्रधीन कोई कारंटवाई भारतम नहीं की जाएगी ।

भाग -IX

विविध

27. आदेशों, नोटिसों प्राविकी की तात्परी :— इन विनियोगों के प्रधीन जारी किए गए प्रत्येक आदेश, नोटिस और अन्य आदेशिका को बोर्ड के सम्बन्धित कर्मचारी को स्वयं प्रदान किया जाएगा या उसे पंजीहन द्वारा प्रेषित किया जाएगा ।

28. समय-मीमा में स्फूर्त देने तथा विनायक के लिए माली के देने की प्रतिष्ठि :— इन विनियोगों में स्फूर्त स्वयं से यथा उपबन्धित के निवाप, वह प्रधिकारी जो इन विनियोगों के प्रधीन आदेश जारी करो ते के लिए वह प्रधिकारी जो इन विनियोगों के प्रधीन प्रूप किए जाने वाले कारण दर्शाया गया है तो इन विनियोगों के प्रधीन प्रूप किए जाने वाले प्रपेक्षित किसी कार्य के लिए इन विनियोगों में विनियोग समय-मीमा को लड़ा सकता है या किसी विनायक के लिए माली दे सकता है ।

29. निरमत और अध्यावृत्तियाँ :— 1. इतायदी बोर्ड सेवा (बर्मी-बर्मण, नियन्त्रण और भर्ती) नियम, 1971 गतवृद्धाग निरमत किए जाने हैं, इनमें कि :

क. यह निरमत उसक नियमों के पूर्व-प्रवर्तन को, या जारी की गई किसी प्रधिकारी की या जारी किए गए किसी आदेश को, या उसके

प्रतीत किए गए किसी कानून को या की गई किसी कार्रवाई को प्रभावित नहीं करेगा;

3. इन विनियमों के प्रारम्भ होने के समय उक्त विनियमों के अधीन अन्वित कार्यवाहियों जारी रहेंगी और यथागम्यता उनका नियटारा इन विनियमों के प्रत्युत्तर हो इस तरह से किया जाएगा जैसा कि वे कार्यवाहियों इन विनियमों के प्रधित को गई कार्यवाहियां हों।

4. इन विनियमों को किसी मान का अर्थ उन व्यक्ति को, जिसका ये विनियम लागू होते हैं, अपील करने के उम्म प्रधिकार से अधिकतम करने के रूप में नहीं लगाया जाएगा, जो उसे इन विनियमों के प्रारम्भण किए जाने से पहले, लागू विनियमों, अविस्तृतताओं या प्रारंभों के अधीन प्राप्त था।

5. इन विनियमों के प्रारम्भ किए जाने से पहले जारी किए गए किसी प्रारंभ के विवेदन इन विनियमों के प्रारम्भण के समय अन्वित

किये जायेंगे परं इन विनियम के प्रत्युत्तर इस तरह से विचार किया जायगा और सम्बन्धित प्रारंभ जारी किए जाएंगे जैसे कि ये प्रारंभ इन विनियमों के अधीन जारी किए गए हों और अप्रोत कम का गई हों।

6. इसके प्रतीत, इन विनियमों के प्रारम्भण किए जाने से पहले जारी किए गए किसी प्रारंभ के विवृत पुनरीक्षण या युलिक्षणकरण के लिए कोई प्रारंभ या प्रारंभ करने इन विनियमों के प्रारम्भण से, इन विनियमों के अधीन इस तरह से किए जाएंगे जैसे कि ये प्रारंभ इन विनियमों के प्रधान जारी किए गए हों।

7.0. मंहांशी का विवाहण :—इन विनियमों के लिए उत्तम की व्याख्या के विषय में यदि कोई मंहांशी उत्तम होता है, तो मानवनियत्र के लिए केन्द्रीय सरकार के पास मंजुर जाएगा।

टा. नन्दकुपार भा.प्र.से., प्रध्यक्ष

प्रत्यक्षमूली

कम पदों और/प्रभवा श्रेणी का वर्णन
प्रत्यक्षमूली

नियोक्ता जास्ति प्रविरोधित करने के लिए सक्षम अपील विधिकारी
प्रधिकारी प्रधिकारी और वे शास्त्रीय जिन्हें वह व्याधि-
रोपित कर सकता है [विनियम-7 की मद-
(1) से मद (10) तक के सद्विष्ट वें]

1	2	3	4	5	6
1.	4,000/- रुपए और इसमें अधिक वैतनमात्र या वैतन वाले पद (प्रधान- श्रेणी-“क” के रासी पद)	प्रध्यक्ष	प्रध्यक्ष	सभी	केन्द्रीय सरकार
2.	श्रेणी-“ख” के सभी पद	प्रध्यक्ष	प्रध्यक्ष	सभी	केन्द्रीय सरकार
3.	श्रेणी-“ग” के सभी पद	सचिव	सचिव	सभी	प्रध्यक्ष
4.	श्रेणी-“घ” के सभी पद	सचिव	सचिव	सभी	प्रध्यक्ष

MINISTRY OF COMMERCE (SPICES BOARD) NOTIFICATION

Cochin, the 10th March, 1992

F. No. 13/2/88-Vig.—In exercise of the powers conferred by Section 39 read with Section 34 of the Spices Board Act, 1986 (10 of 1986), the Spices Board, with the previous approval of the Central Government, hereby makes the following regulations, namely :—

PART—I PRELIMINARY

1. Short title and commencement.—(1) These regulations may be called the Spices Board Service (Classification, Control and Appeal) Regulations, 1992.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.—In these regulations, unless the context otherwise requires,—

(a) “Appointing Authority” in relation to a Board’s employee means,

- (i) the authority empowered to make appointments to the post which the Board’s employee for the time being holds, or
- (ii) the authority which appointed the Board’s employee to the post which he for the time being holds;
- (b) “Board” means the Spices Board constituted under the Spices Board Act, 1986 (10 of 1986);
- (c) “Board’s employee” means any person employed under the Board and includes a servant of the Central Government or State Government so employed;
- (d) “Chairman” means the Chairman of the Board;
- (e) “Disciplinary Authority” means the authority competent under these regulations to impose on a Board’s employee any of the penalties specified in these regulations;
- (f) “Pay” has the meaning assigned to it in F.R. 9(21)(a)(i) of the Fundamental Rules applicable to the Central Government employees.

- (g) "Schedule" means the Schedule to these regulations;
- (h) "Secretary" means the Secretary of the Board;
- (i) "Service" means the service under the Board;
- (j) "The pay" or "Scale of pay" of a post means the pay or scale of pay attached to that post.

3. Application.—(1) These regulations shall apply to all the Board's employees, but shall not apply to—

- (a) any person in casual employment;
- (b) any person on daily wages;
- (c) any person subject to discharge from service on less than one month's notice; and
- (d) any person not brought to the regular establishment.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-regulation (1), the Board may, with the previous approval of the Central Government, by order, exclude from the operation of all or any of these regulations, any employee or groups of employees of the Board.

(3) If any doubt arises whether these regulations or any of them apply to any persons, the matter shall be referred to the Central Government for decision.

PART—II CLASSIFICATION

4. Classification of posts.—All posts under the service of the Board shall be classified as follows:—

Sl. No.	Description of posts	Classification of posts
1.	A Board's post carrying a pay or scale of Rs. 4,000 and above.	Group 'A'
2.	A Board's post carrying a pay or a scale of pay of Rs. 2,900 or above but less than Rs. 4,000.	Group 'B'
3.	A Board's post carrying a pay or a scale of pay of over Rs. 1,150, but less than Rs. 2,900.	Group 'C'
4.	A Board's post carrying a pay or a scale of pay of Rs. 1,150 or less	Group 'D'

PART—III APPOINTING AUTHORITIES

5. Appointment to the service.—Appointments to posts mentioned in sub-section (1) of section 4 of the Spices Board Act, 1986 shall be made by the authorities specified in this behalf in the Schedule.

PART—IV

SUSPENSION

6. Suspension.—(1) The Appointing Authority or any authority to which it is subordinate or the Disciplinary Authority or any other authority empowered in that behalf by the Chairman by general or special order, may place a Board's employee under suspension:—

- (a) Where a disciplinary proceeding against him is contemplated or is pending; or
- (b) Where, in the opinion of the authority aforesaid, he has engaged himself in activities prejudicial to the interests of the security of State; or
- (c) Where a case against him in respect of any criminal offence is under investigation, inquiry or trial.

Provided that, where the order to suspension is made by an authority lower than the Appointing Authority or without the specific authority from the Chairman, such authority shall forthwith report to the Chairman or the concerned authority the circumstances in which the order was made and seek the approval of the action taken by it.

(2) A Board's employee shall be deemed to have been placed under suspension by an order of the Appointing Authority:—

- (a) With effect from the date of his detention if he is detained in custody, whether on a criminal charge or otherwise, for a period exceeding forty eight hours, or
- (b) With effect from the date of his conviction, if, in the event of a conviction for an offence he is sentenced to a term of imprisonment exceeding forty eight hours and is not forthwith dismissed or removed or compulsorily retired consequent to such conviction.

Explanation:—The period of forty eight hours referred to in clause (b) of this sub-regulation shall be computed from the commencement of the imprisonment after the conviction and for this purpose, intermittent periods of imprisonment, if any, shall be taken into account.

3. Where a penalty of dismissal, removal or compulsory retirement from service imposed upon a Board's employee under suspension is set aside in appeal or on review under these regulations and the case is remitted for further inquiry or action or with any other directions, the order of his suspension shall be deemed to have continued in force on and from the date of the original order of dismissal, removal or compulsory retirement and shall remain in force until further orders.

(4) Where a penalty of dismissal, removal or compulsory retirement from service imposed upon a Board's employee is set aside or declared or rendered void in consequence of or by a decision of a Court of Law and the Disciplinary Authority, on a consideration of the circumstances of the case decides to hold a further inquiry against him on the allegations on which the penalty of dismissal, removal or compulsory retirement was originally imposed, the Board's employee shall be deemed to have been placed under suspension by the authority competent so to do from the date of the original order of dismissal, removal or compulsory retirement and shall continue to remain under suspension until further orders :

Provided that on such further inquiry shall be ordered unless it is intended to meet a situation where the Court has passed an order purely on technical grounds without going into the merits of the case.

(5) (a) An order of suspension made or deemed to have been made under this regulation shall continue to remain in force until it is modified or revoked by the authority competent so to do.

(b) Where a Board's employee is suspended or is deemed to have been suspended (whether in connection with any disciplinary proceeding or otherwise) and any other disciplinary proceeding is commenced against him during the continuance of that suspension, the authority competent to place him under suspension may, for reasons to be recorded in writing, direct that the Board's employee shall continue to be under suspension until the termination of all or any of such proceedings.

(c) An order of suspension made or deemed to have been made under this regulation may, at any time, be modified or revoked by the authority which made or is deemed to have made the order or by any authority to which that authority is subordinate.

PART V

PENALTIES AND DISCIPLINARY AUTHORITIES

7. Penalties.—The following penalties may, for good and sufficient reasons, and as hereinafter provided, be imposed on a Board's employee, namely :—

Minor penalties

- (i) Censure;
- (ii) withholding of his promotion;
- (iii) recovery from his pay, of the whole or part, of any pecuniary loss caused by him to the Board by negligence or breach of orders;
- (iv) withholding of increments of pay;

Minor penalties

- (v) reduction to a lower stage in the time-scale of pay for a specified period, with further direction as to whether or not the Board's employee will earn increments of pay during the period of such reduction, and whether on the expiry of such period, the reduction will or will not have the effect of postponing the future increments of his pay;

(vi) reduction to a lower time-scale of pay, grade or post which shall ordinarily be a bar to the promotion of the Board's employee to the time-scale of pay, grade or post from which he was reduced, with or without further directions regarding conditions of restoration to the grade or post from which the Board's employee was reduced and his seniority and pay on such restoration to that grade or post;

(vii) compulsory retirement;

(viii) removal from service which shall not be a disqualification for future employment under the Board;

(ix) dismissal from service which shall be a disqualification for future employment under the Board :

Provided that in every case in which the charge of acceptance from any person of any gratification, other than legal remuneration, as a motive or reward for doing or for bearing to do any official act is established, the penalty mentioned in clause (viii) or clause (ix) shall be imposed :

Provided further that in any exceptional case and for special reasons recorded in writing, any other penalty may be imposed.

Explanation.—The following shall not amount to a penalty within the meaning of this regulation, namely :

- (i) withholding of increments of pay of a Board's employee for his failure to pass any departmental examination in accordance with the rules or orders governing the service or post which he holds or the terms of his appointment;
- (ii) stoppage of Board's employee at the efficiency bar in the time-scale of pay on the ground of his witness to cross the bar;
- (iii) non-promotion of a Board's employee whether in a substantive or officiating capacity, after consideration of his case, to a grade or post for promotion to which he is eligible;
- (iv) reversion of a Board's employee officiating in a higher grade or post in the service to a lower grade or post on the ground that he is considered to be unsuitable for such higher grade or post or on any administrative ground unconnected with his conduct;
- (v) reversion of a Board's employee appointed on probation to any other grade or post, to his permanent grade or post during or at the end of the period of probation in accordance with the terms of his appointment or the rules and orders governing such probation;
- (vi) replacement of the services of a Board's employee whose services have been borrowed from a State Government or the

Central Government or any other authority under the control of a State Government or the Central Government, at the disposal of the authority which had lent his services;

(vii) compulsory retirement of a Board's employee in accordance with the provisions relating to his superannuation or retirement;

(viii) termination of the services—

(a) of a Board's employee appointed on probation, during or at the end of the period of his probation, in accordance with the terms of his appointment or the rules and orders governing such probation; or

(b) of a temporary Board's employee in accordance with the terms of his appointment; or

(c) of a Board's employee, employed under an agreement, in accordance with the terms of such agreement

8. Disciplinary Authorities.—(1) The Chairman may impose any of the penalties specified in regulation 7 upon any Board's employee.

(2) Without prejudice to the provisions of sub-regulation (1), any of the penalties specified in regulation 7 may be imposed on any Board's employee by the Appointing Authority or by any other authority not lower than the appointing authority empowered in this behalf by a general or a special order of the Board.

9. Authority to institute proceedings.—(1) The Chairman or any other authority empowered by a general or special order under regulation 8 may—

(a) institute disciplinary proceedings against any Board's employee;

(b) direct a Disciplinary Authority subordinate to him or it to institute disciplinary proceedings against any Board's employee on whom that disciplinary authority is competent to impose under these regulations any of the penalties specified in regulation 7.

(2) A Disciplinary Authority competent under these regulations to impose any of the penalties specified in clauses (i) to (iv) of regulation 7 may institute disciplinary proceedings against any Board's employee for the imposition of any of the penalties specified in clauses (v) to (ix) of regulation 7, notwithstanding that such Disciplinary Authority is not competent under these regulations to impose any of the latter penalties.

PART VI

PROCEDURE FOR IMPOSING PENALTIES

10. Procedure for imposing major penalties.—(1) No Order imposing any of the penalties specified in clauses (v) to (ix) of regulation 7 shall be made except after an inquiry held as far as may be, in the manner provided in this regulation and regulation 11.

(2) Whenever the Disciplinary Authority is of the opinion that there are grounds for inquiring into the truth of any imputation of misconduct or misbehaviour against a Board's employee, it may itself inquire into, or appoint under this regulation an authority to inquire into the truth thereof.

Explanation.—Where the Disciplinary Authority itself holds the inquiry, any reference in other sub-regulations of this regulation, to the inquiring authority shall be construed as a reference to the Disciplinary Authority.

(3) Where it is proposed to hold an inquiry against a Board's employee under this regulation and regulation 11, the Disciplinary Authority shall draw up or cause to be drawn up—

(i) the substance of the imputations of misconduct or misbehaviour into definite and distinct articles of charge;

(ii) a statement of imputations of misconduct or misbehaviour in support of each article of charge, which shall contain—

(a) a statement of all relevant facts, including any admission or confession made by the Board's employee;

(b) a list of documents by which, and a list of witnesses by whom, the articles of charge are proposed to be sustained.

(4) The Disciplinary Authority shall deliver or cause to be delivered to the Board's employee, a copy of the articles of charge, the statement of the imputations of misconduct or misbehaviour and a list of documents and witnesses by which each article of charge is proposed to be sustained and shall require the Board's employee to submit within such time as may be specified, a written statement of his defence and to state whether he desires to be heard in person.

(5) (a) On receipt of the written statement of defence, the Disciplinary Authority may itself inquire into such of the articles of charge as are not admitted, or, if it considers it necessary to do so, appoint under sub-regulation (2) an inquiring authority for the purpose, and where all the articles of charge have been admitted by the Board's employee in his written statement of defence, the Disciplinary Authority shall record its findings on each charge after taking such evidence as it may think fit, and shall act in the manner laid down in regulation 12 :

Provided that where the proceeding is instituted in pursuance of any order under regulation 7, the authority which instituted

the proceeding shall, if it is not the Disciplinary Authority, submit the records to the Disciplinary Authority concerned for disposal of the case;

(b) if no written statement of defence is submitted by the Board's employee, the Disciplinary Authority may itself inquire into the articles of charge, or may, if it considers it necessary so to do, appoint under sub-regulation (2) an inquiring authority for the purpose.

(c) where the Disciplinary Authority itself inquires into any article of charge or appoints an inquiring authority for holding an inquiry into such charge, it may, by an order, appoint a Board's employee or a legal practitioner, to be known as the "Presenting Officer", to present on its behalf the case in support of the articles of charge.

(6) The Disciplinary Authority shall, where it is not the inquiring authority, forward to the inquiring authority—

- (i) a copy of the articles of charge and the statement of imputations of misconduct or misbehaviour;
- (ii) a copy of the written statement of defence, if any, submitted by the Board's employee;
- (iii) a copy of the statements of witnesses, if any, referred to in sub-clause (b) of clause (ii) of sub-regulation (3);
- (iv) evidence proving the delivery of the documents referred to in sub-regulation (3) to the Board's employee; and
- (v) a copy of the order appointing the "Presenting Officer".

(7) The Board's employee shall appear in person before the inquiring authority on such day and at such time as the inquiring authority may, by a notice in writing, specify, in this behalf, or within such further time, not exceeding ten days as the inquiring authority may allow.

(8) (a) The Board's employee may take the assistance of any other employee of the Board, to present the case on his behalf, but may not engage a legal practitioner for the purpose unless the Presenting Officer appointed by the Disciplinary Authority is a legal practitioner, or, the Disciplinary Authority, having regard to the circumstances of the case, so permits;

Provided that the Board's employee shall not take the assistance of any other employee of the Board if he has two pending disciplinary cases on hand in which he has to give assistance.

(b) The Board's employee may also take the assistance of a retired employee of the Board to present the case on his behalf, subject to such conditions as may be specified by the Chairman.

(9) If the Board's employee who has not admitted any of the articles of charge in his written statement of defence or has not submitted any written statement of defence, appears before the inquiring authority, such authority shall ask him whether he is guilty or has any defence to make and if he pleads guilty to any of the articles of charge, the inquiring authority shall record the plea, sign the record and obtain the signature of the Board's employee thereon.

(10) The inquiring authority shall return a finding of guilt in respect of those articles of charge to which the Board's employee pleads guilty.

(11) The inquiring authority shall, if the Board's employee fails to appear within the specified time or refuses or omits to plead, require the Presenting Officer to produce the evidence by which he proposes to prove the articles of charge, and shall adjourn the case to a later date not exceeding thirty days, after recording an order that the Board's employee may, for the purpose of preparing his defence—

- (i) inspect, within five days of the order or within such further time not exceeding five days as the inquiring authority may allow, the documents specified in the list referred to in sub-clause (b) of Clause (ii) of sub-regulation (3);
- (ii) submit a list of witnesses to be examined on his behalf.

Note : If the Board's employee applies in writing for the supply of copies of the statements of witnesses mentioned in the list referred to in sub-regulation (3), the inquiring authority shall furnish him with such copies as are available, as early as possible and in any case not later than three days before the commencement of the examination of the witnesses on behalf of the Disciplinary Authority;

(iii) give a notice, within ten days of the order or within such further time not exceeding ten days as the inquiring authority may allow, for the discovery or production of any documents which are in the possession of the Board, but not mentioned in the list referred to in sub-regulation (3).

Note : The Board's employee shall indicate in his notice, the relevance of the documents required by him to be discovered or produced by the Board.

(12) The inquiring authority shall, on receipt of the notice for the discovery or production of documents, forward the same or copies thereof to the authority in whose custody or possession the documents are kept, with a requisition for the production of the documents by such date as may be specified in such requisition :

Provided that the inquiring authority may, for reasons to be recorded by it in writing, refuse to requisition such of the documents as are, in its opinion, not relevant to the case.

(13) On receipt of the requisition referred to in sub-regulation (12), every authority having the custody or possession of the requisitioned documents

shall produce the same before the inquiring authority :

Provided that if the authority having the custody or possession of the requisitioned documents is satisfied for reasons to be recorded in writing that the production of all or any of such documents would be against the public interest or security of the State, it shall inform the inquiring authority accordingly and the inquiring authority shall, on being so informed, communicate the information to the Board's employee and withdraw the requisition made by it for the production or discovery of such documents.

(14) On the date fixed for the inquiry, the oral and documentary evidence by which the articles of charge are proposed to be proved shall be produced by or on behalf of the Disciplinary Authority. The witnesses shall be examined by or on behalf of the Presenting Officer and may be cross-examined by or on behalf of the Board's employee. The Presenting Officer shall be entitled to re-examine the witnesses on any points on which they have been cross-examined, but not on any new matter, without the leave of the inquiry authority. The inquiring authority may also put such questions to the witnesses as it may deem fit.

(15) If it shall appear necessary before the close of the case on behalf of the Disciplinary Authority, the inquiring authority may, in its discretion, allow the Presenting Officer to produce evidence not included in the list given to the Board's employee or may itself call for new evidence or recall and re-examine any witness and in such case the Board's employee shall be entitled to have, if he demands it, a copy of the list of further evidence proposed to be produced and an adjournment of the inquiry for three clear days before the production of such new evidence, exclusive of the day of adjournment and the day to which the inquiry is adjourned. The inquiring authority shall give the Board's employee an opportunity of inspecting such documents before they are taken on the record. The inquiring authority may also allow the Board's employee to produce new evidence, if it is of the opinion that the production of such evidence is necessary in the interest of justice.

Note :—New evidence shall not be permitted or called for or any witness shall not be recalled to fill up any gap in the evidence. Such evidence may be called for only when there is an inherent lacune or defect in the evidence which has been produced originally.

(16) When the case for the Disciplinary Authority is closed, the Board's employee shall be required to state his defence, orally or in writing, as he may prefer. If the defence is made orally, it shall be recorded and the Board's employee shall be required to sign the record. In either case, a copy of the statement of defence shall be given to the Presenting Officer, if any, appointed.

(17) The evidence on behalf of the Board's employee shall then be produced. The Board's employee may examine himself in his own behalf if he so prefers. The witnesses produced by the Board's employee shall then be examined and shall be liable to

cross-examination, re-examination and examination by the inquiring authority according to the provisions applicable to the witnesses for the Disciplinary Authority.

(18) The inquiring authority may, after the Board's employee closes his case, and shall, if the Board's employee has not examined himself, generally question him on the circumstances appearing against him in the evidence, for the purpose of enabling the Board's employee to explain any circumstances appearing in the evidence against him.

(19) The inquiring authority may, after the completion of the production of evidence, hear the Presenting Officer, if any, appointed, and the Board's employee, or permit them to file written briefs of their respective cases, if they so desire.

(20) If the Board's employee to whom a copy of the articles of charge has been delivered, does not submit the written statement of defence on or before the date specified for the purpose or does not appear in person before the inquiring authority or otherwise fails or refuses to comply with the provisions of this regulation, the inquiring authority may hold the inquiry ex parte.

(21) (a) Where a Disciplinary Authority competent to impose any of the penalties specified in clauses (i) to (iv) of regulation 7, has it self inquired into or, caused to be inquired into the articles of any charge and that authority, having regard to its own findings or having regard to its decision on any of the findings of any inquiring authority appointed by it, is of the opinion that the penalties specified in clauses (v) to (ix) of regulation 7 should be imposed on the Board's employee, that authority shall forward the records of the inquiry to such Disciplinary Authority as is competent to impose the last mentioned penalties.

(b) the Disciplinary Authority to which the records are so forwarded may act on the evidence on record or may, if it is of the opinion that further examination of any of the witnesses is necessary in the interests of justice, recall the witnesses and examine, cross-examine and re-examine the witnesses and may impose on the Board's employee such penalty as it may deem fit in accordance with these regulations.

(22) Whenever any inquiring authority, after having heard and recorded the whole or any part of the evidence in an inquiry, ceases to exercise jurisdiction therein, and is succeeded by another inquiring authority which has, and which exercises, such jurisdiction, the inquiring authority so succeeding may act on the evidence so recorded by its predecessor, or partly recorded by itself :

Provided that if the succeeding inquiring authority is of the opinion that further examination of any of the witnesses whose evidence has already been recorded is necessary in the interests of justice, it may recall, examine, cross-examine and re-examine any

such witnesses as hereinbefore provided.

(23)(i) After the conclusion of the inquiry, a report shall be prepared and it shall contain—

- articles of charge and the statement of the imputations of misconduct or misbehaviour;
- the defence of the Board's employee in respect of each article of charge;
- an assessment of the evidence in respect of each article of charge;
- the findings on each article of charge and the reasons therefor.

Explanation.—If in the opinion of the inquiring authority the proceedings of the inquiry establish any article of charge different from the original articles of the charge, it may record the findings on such article or charge :

Provided that the findings on such article of charge shall not be recorded unless the Board's employee has either admitted the facts on which such article of charge is based or has had a reasonable opportunity of defending himself against such article of charge;

(ii) the inquiring authority, where it is not itself the Disciplinary Authority, shall forward to the Disciplinary Authority the records of inquiry which shall include—

- the report prepared by it under clause (i);
- the written statement of defence, if, any, submitted by the Board's employee;
- the oral and documentary evidence produced in the course of the inquiry;
- written briefs, if any, filed by the Presenting Officer or the Board's employee or both during the course of the inquiry; and
- the orders, if any, made by the Disciplinary Authority and the inquiring authority in regard to the inquiry.

11. Action on the inquiry report:—(1) The Disciplinary Authority, if it is not itself the inquiring authority may, for reasons to be recorded by it in writing, remit the case to the inquiring authority for further inquiry and report, and the inquiring authority shall thereupon proceed to hold the further inquiry, as far as may be, according to the provisions of regulation 10.

(2) The Disciplinary Authority shall, if it disagrees with the findings of the inquiring authority on any article of charge, record its reasons for such disagreement and record its own findings on such charge if the evidence on record is sufficient for the purpose.

(3) If the Disciplinary Authority having to its findings on all or any of the articles of charge is of the opinion that any of the penalties specified in clauses (i) to (iv) of regulation 7 should be imposed on the

Board's employee, it shall, notwithstanding anything contained in regulation 12, make an order imposing such penalty.

(4) If the Disciplinary Authority having regard to its findings on all or any of the articles of charge and on the basis of the evidence adduced during the inquiry is of the opinion that any of the penalties specified in clauses (v) to (ix) of regulation 7 should be imposed on the Board's employee, it shall make an order imposing such penalty and it shall not be necessary to give the Board's employee any opportunity of making representation on the penalty proposed to be imposed.

12. Procedure for imposing minor penalties.—(1) Subject to the provisions of sub-regulations (3) of regulation 11, no order imposing on a Board's employee any of the penalties specified in clauses (i) to (iv) of regulation 7 shall be made except after—

- informing the Board's employee in writing of the proposal to take action against him and of the imputations of misconduct or misbehaviour on which it is proposed to be taken, and giving him reasonable opportunity of making such representation as he may wish to make against the proposal;
- holding an inquiry in the manner laid down in sub-regulations (3) to (23) of regulation 10, in every case in which the Disciplinary Authority is of the opinion that such inquiry is necessary;
- taking the representation, if any, submitted by the Board's employee under clause (a) and the record of inquiry, if any, held under clause (b) into consideration;
- recording a finding on each imputation of misconduct or misbehaviour.

(2) Notwithstanding anything contained in clause (b) of sub-regulation (1), if in a case it is proposed after considering the representation, if any made by the Board's employee under clause (a) of that sub-regulation, to withhold increments of pay and such withholding of increments is likely to effect adversely the amount of pension payable to the Board's employee or to withhold increments of pay for a period exceeding three years or to withhold increments of pay with cumulative effect for any period, an inquiry shall be held in the manner laid down in sub-regulations (3) to (23) of regulation 10, before making any order imposing on the Board's employee any such penalty.

(3) The record of proceedings in such cases shall include—

- a copy of the intimation to the Board's employee of the proposal to take action against him;
- a copy of the statement of imputations of misconduct or misbehaviour delivered to him;
- his representation, if any;

- (iv) the evidence produced during the inquiry;
- (v) the findings on each imputation of misconduct or misbehaviour; and
- (vi) the orders on the case together with the reasons therefor.

13. Communication of order.—Orders made by the Disciplinary Authority shall be communicated to the Board's employee who shall also be supplied with a copy of the report of the inquiry, if any, held by the Disciplinary Authority and a copy of its findings on each article of charge, or where the Disciplinary Authority is not the inquiring authority a copy of the report of the inquiring authority and a statement of the findings of the Disciplinary Authority together with brief reasons for its disagreement, if any, with the findings of the inquiring authority unless they have already been supplied to him.

14. Common proceedings.—(1) Where two or more Board's employees are concerned in any case, the Chairman or any other authority competent to impose the penalty of dismissal from service on all such Board's employees may make an order directing that disciplinary action against all of them may be taken in a common proceeding.

Note:—If the authorities competent to impose the penalty of dismissal on such Board's employees are different, an order for taking disciplinary action in a common proceeding may be made by the highest of such authorities with the consent of the others.

(2) Any such order shall specify—

- (i) the authority which may function as the Disciplinary Authority for the purpose of such common proceeding;
- (ii) the penalties specified in regulation 7 which such Disciplinary Authority shall be competent to impose;
- (iii) whether the procedure laid down in regulation 10 and regulation 11 or regulation 12 shall be followed in the proceeding.

15. Special procedure in certain cases.—Notwithstanding anything contained in regulation 10—

- (i) where any penalty is imposed on a Board's employee on the ground of conduct which has led to his conviction on a criminal charge, or
- (ii) Where the Disciplinary Authority is satisfied for reasons to be recorded by it in writing that it is not reasonably practicable to hold an inquiry in the manner provided in these regulations, or
- (iii) where the Board, in consultation with the Central Government, is satisfied that in the interest of the security of State, it is not expedient to hold any inquiry in the manner provided in these regulations, the Disciplinary Authority may consider the circumstances of the case and make such orders thereon as it deems fit.

16. Provisions regarding officers lent to Governments, etc.—(1) Where the services of a Board's

employee are lent to Government or an authority subordinate thereto or to a local or other authority (hereafter in this regulation referred to as "the borrowing authority"), the borrowing authority shall have the powers of the Appointing Authority for the purpose of placing such employee under suspension and of the Disciplinary Authority for the purpose of conducting a disciplinary proceeding against him:

Provided that the borrowing authority shall forthwith inform the authority which lent the services of the Board's employee (hereafter in this regulation referred to as "the lending authority") of the circumstances leading to the order of suspension of such Board's employee or the commencement of the disciplinary proceeding, as the case may be.

(2) In the light of the findings in the disciplinary proceeding conducted against the Board's employee,—

- (i) if the borrowing authority is of the opinion that any of the penalties specified in clauses (i) to (iv) of regulation 7 should be imposed on the Board's employee, it may, after consultation with the lending authority, make such orders on the case as it deems necessary:

Provided that in the event of a difference of opinion between the borrowing authority and the lending authority, the services of the Board's employee shall be replaced at the disposal of the lending authority;

- (ii) if the borrowing authority is of the opinion that any of the penalties specified in clauses (v) to (ix) of regulation 7 should be imposed on the Board's employee, it shall replace his services at the disposal of the lending authority and transmit to it the proceedings of the inquiry and thereupon the lending authority may, if it is the Disciplinary Authority, pass such orders thereon as it may deem necessary, or, if it is not the Disciplinary Authority, submit the case to the Disciplinary Authority which shall pass such orders on the case as it may deem necessary.

Explanation.—The Disciplinary Authority may make an order under this sub-regulation on the basis of the record of the proceedings transmitted to it by the borrowing authority, or after holding such further inquiry as it may deem necessary as far as may be, in accordance with regulation 10.

17. Provisions regarding officers borrowed from Government, etc.—(1) Where an order of suspension is made or a disciplinary proceeding is conducted against an employee whose services have been borrowed from a Government or an authority subordinate thereto or a local or other authority, the authority lending his services (hereafter in this regulation referred to as "the lending authority") shall forthwith be informed of the circumstances leading to the order of suspension or of the commencement of the disciplinary proceeding, as the case may be.

(2) In the light of the findings in the disciplinary proceeding conducted against the Board's employee, if the Disciplinary Authority is of the opinion that any of the penalties specified in clauses (i) to (iv) of regulation 7 should be imposed on him, may, subject to the provisions of sub-regulation (2) of regulation 11 and after consultation with the lending authority, pass such orders on the case as it may deem necessary :

Provided that

- (i) in the event of a difference of opinion between the borrowing authority and the lending authority, the services of the employee shall be replaced at the disposal of the lending authority;
- (ii) if the Disciplinary Authority is of the opinion that any of the penalties specified in clauses (v) to (ix) of regulation 7 should be imposed on the employee, it shall replace the services of such employee at the disposal of the lending authority and transmit to it the proceedings of the inquiry for such action as it may deem necessary.

PART-VII

APPEALS

18. Orders against which no appeal lies.—Notwithstanding anything contained in this Part, no appeal shall lie against—

- (i) any order made by the Central Government;
- (ii) any order of an interlocutory nature or of the nature of a step-in-aid or the final disposal of a disciplinary proceeding, other than an order of suspension;
- (iii) any order passed by an inquiring authority in the course of an inquiry under regulation 10.

19. Orders against which appeal lies.—Subject to the provisions of regulation 18, a Board's employee may prefer an appeal against all or any of the following orders, namely :—

- (i) an order of suspension made or deemed to have been made under regulation 6;
- (ii) an order imposing any of the penalties specified in regulation 7, whether made by the Disciplinary Authority or by any reviewing authority;
- (iii) an order enhancing any penalty, imposed under regulation 7;
- (iv) an order which—
 - (a) denies or varies to his disadvantage, his pay, allowances, pension or other conditions of service as regulated by regulations or by agreement; or
 - (b) interprets to his disadvantage the provisions of any such regulation or agreement;

(v) an order—

- (a) stopping him at the efficiency bar in the time-scale of pay on the ground of his unfitness to cross the bar;
- (b) reverting him while officiating in a higher service, grade or post to a lower service, grade or post, otherwise than as a penalty;
- (c) reducing or withholding the pension or denying the maximum pension admissible to him under the rules;
- (d) determining the substance and other allowances to be paid to him for the period of suspension or for the period during which he is deemed to be under suspension or for any portion thereof;
- (e) determining his pay and allowances—
 - (i) for the period of suspension, or
 - (ii) for the period from the date of his dismissal, removal, or compulsory retirement from service, or from the date of his reduction to a lower service, grade, post, time-scale of pay or stage in a time-scale of pay, to the date of his reinstatement or restoration to his service, grade or post; or
- (f) determining whether or not the period from the date of his suspension or from the date of his dismissal, removal, compulsory retirement or reduction to a lower service, grade, post, time-scale of pay or stage in a time-scale of pay to the date of his reinstatement or restoration to his service, grade or post shall be treated as a period spent on duty for any purpose.

Explanation.—In this regulation—

- (i) the expression "Board's employee" includes a person who has ceased to be in the Board's service;
- (ii) the expression "pension" includes additional pension, gratuity and any other retirement benefit.

20. Appellate Authorities.—(1) A Board's employee, including a person who has ceased to be in the Board's service, may prefer an appeal against all or any of the orders specified in regulation 19, to the authority specified in this behalf in the Schedule.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-regulation (1)—

- (i) an appeal against an order in a common proceeding held under regulation 14 shall lie to the authority to which the authority functioning as the Disciplinary Authority for the purpose of that proceeding is immediately subordinate;
- (ii) where the person who made the order appealed against becomes, by virtue of his

subsequent appointment or otherwise, the appellate authority in respect of such order, an appeal against such order shall lie to the authority to which such person is immediate/ subordinate.

(3) A Board's employee may prefer an appeal against an order imposing any of the penalties specified in regulation 7 to the Central Government, where no such appeal lies to that authority under sub-regulation (1) or sub-regulation (2), if such penalty is imposed, by any authority of the Board on such Board's employee in respect of his activities connected with his work as an office-bearer of an association, federation or union recognised by the Board as a service organisation.

21. Period of limitation for appeals.—No appeal preferred under this part shall be entertained unless such appeal is preferred within a period of forty-five days from the date on which a copy of the order appealed against is delivered to the appellant:

Provided that the appellate authority may entertain the appeal after the expiry of the said period, if it is satisfied that the appellant had sufficient cause for not preferring the appeal in time.

22. Form and contents of appeal.—(1) Every person preferring an appeal shall do so separately and in his own name.

(2) The appeal shall be presented to the authority to whom the appeal is sent, a copy being forwarded by the appellant to the authority which made the order appealed against. It shall contain all material statements and documents on which the appellant relies shall not contain any disrespectful or improper language and shall be complete in itself.

(3) The authority which made the order appealed against shall, in a copy of the appeal, forward the same with its comments thereon together with the relevant record to the appellate authority without any avoidable delay, and without waiting for any direction from the appellate authority.

23. Consideration of appeal.—(1) In the case of an appeal against an order of suspension, the appellate authority shall consider whether in the light of the provisions of regulation 6 and having regard to the circumstances of the case, the order of suspension is justified or not and confirm or revoke the order accordingly.

(2) In the case of an appeal against an order imposing any of the penalties specified in regulation 7 or enhancing any penalty imposed under the said regulation, the appellate authority shall consider—

(a) whether the procedure laid down in these regulations has been complied with and if not, whether such non-compliance has re-

sulted in the violation of any provisions of the Constitution of India or in the failure of justice;

(b) whether the findings of the Disciplinary Authority are warranted by the evidence on record; and

(c) whether the penalty or the enhanced penalty imposed is adequate, inadequate or severe;

and pass orders—

(i) confirming, enhancing, reducing, or setting aside the penalty; or

(ii) remitting the case to the authority which imposed or enhanced the penalty or to any other authority of the Board with such direction as it may deem fit in the circumstances of the case:

Provided that—

(i) if such enhanced penalty which the appellate authority proposes to impose is one of the penalties specified in clauses (v) to (ix) of regulation 7 and an inquiry under regulation 10 has not already been held in the case, the appellate authority shall, subject to the provisions of regulation 15, if it so desires, direct that such inquiry be held in accordance with the provisions of regulation 10 and thereafter, on a consideration of the proceedings of such inquiry, make such orders as it may deem fit;

(ii) if the enhanced penalty which the appellate authority proposes to impose is one of the penalties specified in clauses (v) to (ix) of regulation 7 and an inquiry under regulation 10 has already been held in the case, the appellate authority shall make such orders as it may deem fit; and

(iii) no order imposing an enhanced penalty shall be made in any other case unless the appellant has been given a reasonable opportunity, as far as may be, in accordance with the provisions of regulation 12, of making a representation against such enhanced penalty.

(3) In an appeal against any other order specified in regulation 19, the appellate authority shall consider all the circumstances of the case and make such orders as it may deem just and equitable.

24. Implementation of orders in appeal.—The authority which made the order appealed against shall give effect to the orders passed by the appellate authority.

PART VIII

REVISION AND REVIEW

25. Central Government's power to revise.—(1) Notwithstanding anything contained in these regulations, the Central Government may, at any time, either on its own motion or otherwise, call for the records of the case, revise any order made under these regulations or under the rules repealed by regulation 29 from which an appeal is allowed, but from which no appeal has been preferred or from which no appeal is allowed, and may—

- (a) confirm, modify or set aside the order; or
- (b) confirm, reduce, enhance or set aside the penalty imposed by the order, or impose any penalty where no penalty has been imposed; or
- (c) remit the case to the authority which made the order or to any other authority, directing such authority to make such further inquiry as it may consider proper in the circumstances of the case; or
- (d) pass such other orders as it may deem fit;

Provided that no order imposing or enhancing any penalty shall be made by the reviewing authority unless the Board's employee concerned has been given a reasonable opportunity of making a representation against the penalty proposed and, where it is proposed to impose any of the penalties specified in clauses (v) to (ix) of regulation 7 or to call and the penalty imposed by the order sought to be revised to any of the penalties specified in those clauses and if an inquiry under regulation 10 has not already been held in the case no such penalty shall be imposed except after an inquiry in the manner laid down in regulation 10, subject to the provisions of regulation 13:

Provided further that the powers of revision may also be exercised in respect of orders specified in clause (iv) of regulation 19.

26. Chairman's power to review.—The Chairman may on his own motion or otherwise call for records of the case in a disciplinary proceeding taken under these regulations by any authority subordinate to him, review any order passed in such a case and pass such orders as he deems fit, as if the Board's employee had preferred an appeal to him against such order:

Provided that the powers of review under this regulation may also be exercised in respect of orders specified in clause (iv) of regulation 19;

Provided further that no action under this regulation shall be initiated more than six months after the date of the order to be reviewed.

PART IX

MISCELLANEOUS

27. Service of orders, notices, etc.—Every order, notice and other process made or issued under these regulations shall be served in person on the Board's employee concerned or communicated to him by registered post.

28. Power to relax time-limit and to condone delay.—Save as otherwise expressly provided in these regulations, the authority competent under these regulations to make any order may, for good and sufficient reasons or if sufficient cause is shown, extend the time specified in these regulations for anything required to be done under these regulations or condone any delay.

29. Repeal and saving.—(1) The Cardamom Board Service (Classification, Control and Appeal) Rules, 1971 are hereby repealed:

Provided that—

(a) such repeal shall not affect the previous operation of the said rules, or any notification or order made, or anything done or any action taken, thereunder;

(b) any proceedings under the said rules, pending at the commencement of these regulations shall be continued and disposed of as far as may be in accordance with the provisions of these regulations as if such proceedings were proceedings under these regulations.

(2) Nothing in these regulations shall be construed as depriving any person to whom these regulations apply, of any right of appeal which had accrued to him under the rules, notifications or orders in force before the commencement of these regulations.

(3) An appeal pending at the commencement of these regulations against an order made before such commencement shall be considered and orders thereon shall be made, in accordance with these regulations, as if such orders were made and the appeal were preferred under these regulations.

(4) As from the commencement of these regulations any appeal or application for review or revision against any orders made before such commencement shall be preferred or made under these regulations as if such orders were made under these regulations.

30. Removal of doubts.—If any doubt arises as to the interpretation of any of the provisions of these regulations, the matter shall be referred to the Central Government for decision.

T. NANDAKUMAR, (I.A.S.), Chairman

SCHEDULE

Sl. No.	Description of posts and or class	Appointing Authority	Authority competent to impose penalty and the penalty which it may impose (with reference to item (i) to (ix) in regulation 7)		Appellate Authority
			Authority	Penalty	
1	2	3	4	5	6
I	Posts carrying a pay or a scale of pay of Rs 4,000 and above (ie, all Group A posts)	Chairman	Chairman	All	Central Government
II	All Group B posts	Chairman	Chairman	All	Central Government
III	All Group C posts	Secretary	Secretary	All	Chairman
IV	All Group D posts	Secretary	Secretary	All	Chairman